ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

ऑयल किरण

অইল কিৰণ OIL KIRAN | 2019 | वर्ष 16 अंक 25 |

सम्पादकीय

ऑयल किरण का 25वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्षानुभूति हो रही है।

आप सभी ने कभी न कभी हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान का नारा जरूर सुना होगा, अब समय है इस पर गौर करने का। यह भाषा एवं मानव स्वभाव, संस्कृति की सरलतम अभिव्यक्ति है। भारत के भाषायी संदर्भ में इससे सरल और सुंदर कुछ और नहीं हो सकता है, मैं आपका ध्यान इस नारे पर इसलिए आकर्षित करना चाह रहा था क्योंकि जिस हिंदी की हमें आज सर्वाधिक आवश्यकता है, इसका मूल रूप इसी के आस-पास है। हिन्दी को सरल बनना और शुद्धतावादी आडंबरों से उसे दूर रखने की आज सर्वाधिक आवश्यकता है।

ऑयल इंडिया की छमाही हिंदी पत्रिका की विकास यात्रा आप सभी के सहयोग से जारी है, जिसके लिए मैं आप सभी को पूरे राजभाषा परिवार की तरफ से धन्यवाद ज्ञापित करता हूं। इस पत्रिका के माध्यम से हमारे कार्मिकों और हमारी नई पीढ़ी को अपनी सृजनात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा की अभिव्यक्ति के लिए एक सुअवसर मिलता है।

ऑयल किरण के सभी लेखकों को हार्दिक धन्यवाद।

आशा करता हूं कि आपको ''ऑयल किरण'' का यह अंक पसंद आयेगा। ऑयल किरण के इस अंक को उत्कृष्ट एवं पठनीय बनाने के लिए विशेष प्रयास किये गये हैं, इसे और बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों और मनोभावों का सदैव स्वागत है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

(डॉ. शैलेश त्रिपाठी)
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

सलाहकार
श्री दिलीप कुमार भूयां, महाप्रबंधक (जन संपर्क), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री त्रिदिव हजारिका, उप महाप्रबंधक (सीएसआर एवं सीसी), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

प्रधान सम्पादक
डॉ. शैलेश त्रिपाठी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादक मंडल
डॉ. रमणजी झा, उप महाप्रबंधक (रा. भा.), निगमित कार्यालय, नोएडा
डॉ. वी. एम. बरेजा, उप महाप्रबंधक (रा. भा.) कोलकाता कार्यालय, कोलकाता
श्री हरेकृष्ण बर्मन, मुख्य प्रबंधक (रा. भा.) राजस्थान परियोजना, जोधपुर
श्री नारायण शर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (रा. भा.) पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी

सम्पादन-सहयोगी
श्री दीपक प्रसाद, पर्यवेक्षण सहायक (इजी -IV), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री विजय कुमार गुप्ता, पर्यवेक्षण सहायक (इजी-I) पीजी, क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान
श्री दिगन्त डेका, वरिष्ठ सहायक - I (हिन्दी अनुवादक), क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान

संपादकीय कार्यालय :
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड, क्षेत्र मुख्यालय
डाकघर : दुलियाजान - 786602, जिला : डिब्रूगढ़ (असम)
ई-मेल : hindi_section@oilindia.in

ऑयल किरण
वर्ष - 16, अंक - 25

आवरण विषय
ऑयल इंडिया लिमिटेड

इस अंक में .....

देश प्रेम	8
वो दिन कब आयेगा	9
ग्लोबल वार्मिंग	9
भ्रष्टाचार मुक्त देश	10
सूफियाना इश्क़ मेरा	10
योग - अनमोल रत्न	11
अनकहे पल	11
बेइंतहा	11
किस्सा कुर्सी का	12
आखिर बच्चे खेले कहां	14
पीढ़ी अंतराल	15
संस्थागत संदर्भित एवं संवैधानिक अधिकार-मतदान के अधिकार विषयक पूर्वनिर्धारित समागम	17
हिंदी भाषा की स्थिति और देश के विकास में इसका योगदान	20
मोरान ऑयल इंडिया क्लब का चुनाव और पुनर्जीवन - मेरे कर्मजीवन का अविस्मरणीय अध्याय	21
प्रकृति किस ओर जा रही है	24
नंदा-देवी राज जात: दुनिया की सबसे लम्बी पद-यात्रा	25
भूटान की यात्रा	28
ऑयल ने 'फेम सेफ्टी एक्सीलेंस अवार्ड-2019' प्राप्त किया	31
ऑयल को भारत में काम करने के लिए 'तृतीय सर्वश्रेष्ठ कंपनी' के रूप में चुना गया	31
छह शिक्षकों को ऑयल शिक्षा रत्न पुरस्कार 2018 से सम्मानित किया गया	32
पुरस्कार एवं प्रोत्साहन	33
ऑयल राजभाषा समाचार	**34-43**

पत्रिका में प्रकाशित लेख, रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। ऑयल राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

नि:शुल्क एवं आंतरिक विरतण हेतु प्रकाशित।

मुद्रक सैकिया प्रिंटर्स, दुलियाजान, दूरभाष - 9435038425

सत्यमेव जयते

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत
AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

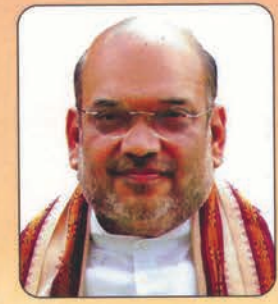

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं !

हमारा देश विविध भाषाओं, बोलियों एवं संस्कृतियों का देश है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, सहित्य एवं दर्शन का गौरवपूर्ण इतिहास हिंदी भाषा में उपलब्ध है। हिंदी देश के सभी भाषा–भाषियों के मध्य भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। हिंदी भाषा में संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं तथा बोलियों के भाव जीवंत हैं। भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

किसी भी लोकतांत्रिक देश में जनता और शासन के मध्य जन भाषा ही संपर्क भाषा के रूप में सार्थक भूमिका अदा कर सकती है। हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना बड़ा सरल है। हिंदी में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वाधिक लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए ही भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया एवं संविधान में इस संबंध में समुचित प्रावधान किए गए।

अपनी भाषा में मौलिक लेखन और कामकाज से अभिव्यक्ति बहुत ही सहज और सरल होती है, जो अनुवाद की भाषा से संभव नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को सरलतम रूप में अपनाकर राजकीय कामकाज में अधिक से अधिक इसका प्रयोग किया जाए। मैं भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/ कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे अपने दैनिक और सरकारी कामकाज में मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

उदारीकरण, भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के इस युग में देश को आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनाने तथा कौशल विकास को प्रोत्साहन देते हुए आम जनता को सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि अभियांत्रिकी और स्वास्थ्य सेवाओं जैसे क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के माध्यम से शिक्षित करने की बहुत अधिक आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार-प्रसार करने के लिए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **कंठस्थ** का निर्माण किया है। स्मृति आधारित इस अनुवाद कार्य प्रणाली की विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में की गई अनुवाद सामग्री का पुनः प्रयोग कर सकता है जिससे समय की काफी बचत होती है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-साधारण के लिए **लीला हिंदी प्रवाह मोबाइल ऐप** तैयार किया गया है जिसके माध्यम से 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी अपनी मातृभाषाओं में निःशुल्क हिंदी सीख सकते है।

संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है। संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी दृढ़ता और तत्परता के साथ करें, जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन करते हैं। हम स्वयं अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आम आदमी सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ उठा सके।

आइए ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम यह प्रतिज्ञा लें कि हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी के माध्यम से स्वदेशी विज्ञान की समृद्ध परंपरा को जन-जन तक पहुंचाकर शिक्षित, शक्तिशाली एवं नए भारत का निर्माण करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु विश्व पटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण एवं समृद्ध भाषा के रूप में विश्व भाषा बनेगी।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से पुनः हार्दिक शुभकामनाएं !

जय हिंद !

(अमित शाह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2019

धर्मेन्द्र प्रधान
Dharmendra Pradhan

मंत्री
पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस;
इस्पात मंत्रालय
भारत सरकार
नई दिल्ली-110 001
Minister
PETROLEUM & NATURAL GAS;
STEEL
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI-110 001

अपील

प्रिय साथियो,

हिंदी दिवस पर आपको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि हिंदी न केवल भारत जैसे बहुभाषी देश में बल्कि विश्व भर में अपनी पहचान स्थापित कर चुकी है। कुछ देशों में यह एक संपर्क भाषा के रूप में भी लोकप्रियता हासिल कर रही है। हिंदी के गौरवशाली इतिहास, भारतीय संस्कृति में इसके योगदान, विविधताओं से भरे हमारे देश को एकता के सूत्र में पिरोने और इसके प्रयोग की स्वीकार्यता को देखते हुए ही 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा घोषित किया। तब से, इस दिन को हम हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं और अपना अधिक से अधिक सरकारी काम हिंदी में करने की वचनबद्धता को दोहराते हैं।

यह सत्य है कि भारत में व्यवसाय के विकास में हिंदी की भूमिका अहम है क्योंकि पूरे भारत में आम जन तक पहुंचने का यह सबसे कारगर माध्यम है। इसलिए, मैं चाहूंगा कि पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय तथा इसके उपक्रम अपनी नीतियों, कार्यक्रमों एवं प्रचार संबंधी कार्यकलापों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। मंत्रालय के सभी अधिकारी और कर्मचारी संकल्प लें कि वे मूल रूप से अपना सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए स्वयं तो प्रयासरत रहेंगे ही, अपने सहकर्मियों को भी हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे। हिंदी ई-टूल्स से कम्प्यूटर पर काम करना बहुत आसान हो गया है। मैं उम्मीद करता हूं कि आप इन ई-टूल्स का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करेंगे और इनकी मदद से राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम में दिए लक्ष्यों को प्राप्त करने की पूरी कोशिश करेंगे।

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रयोजन से 1 से 15 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया जाएगा। पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रकार की हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। मैं आशा करता हूँ कि सभी अधिकारी/कर्मचारी इन प्रतियोगिताओं में भाग लेकर इन्हें सफल बनाने में अपना योगदान देंगे। अपने सभी उपक्रमों से भी मेरी अपील है कि वे अपने सभी कार्यालयों में लोकप्रिय प्रतिस्पर्धाओं और कार्यक्रमों का आयोजन करें और इनमें अधिक से अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों की भागीदारी सुनिश्चित करें। इससे सरकारी कामकाज में हिंदी के सहज प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा।

मैं, आप सबको हिंदी दिवस की और इस अवसर पर आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों के सफल आयोजन के लिए पुनः अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

नई दिल्ली
दिनांक : 28 अगस्त, 2019

(धर्मेन्द्र प्रधान)

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय : 201-ए, शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001 टेलीफोन : +91-11-23386622 फैक्स : +91-11-23386118
इस्पात मंत्रालय : 192, प्रथम मंजिल, उद्योग भवन, नई दिल्ली-110011 टेलीफोन : +91-11-23062345 फैक्स : +91-11-23061395

अध्यक्ष की लेखनी से....

इस स्तंभ के माध्यम से आप से संवाद करने का यह मेरा प्रथम अवसर है। इस अवसर पर सबसे पहले मैं ऑयल की राजभाषा टीम को ऑयल किरण के 25वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए बधाई देना चाहता हूं।

भारत सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए भी ऑयल की पूरी राजभाषा टीम बधाई की पात्र है। आप सभी को पता ही है कि ऑयल के अधिकतर कार्यालय भाषायी आधार पर विभाजित भारत सरकार के ''ग'' क्षेत्र में स्थित है। हमने अपने कार्यालयों में सिर्फ राजभाषा नीति का कर्यान्वयन ही नहीं किया है वरन हमने अपने प्रचालन क्षेत्रों के विद्यालयों, नराकास सदस्यों और ऑयल के अपने कार्यालयों में हिंदी के लिए एक सकारात्मक माहौल बनाने की कोशिश भी की है।

ऑयल इंडिया लिमिटेड में राजभाषा कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं को एक साथ विभिन्न स्तरों पर क्रियान्वित किया जाता है। भारत सरकार के आदेशानुसार तिमाही बैठकें, हिंदी माह समारोह, धारा 3(3) का कार्यान्वयन, राजभाषा नियमों का अनुपालन इत्यादि को सफलता पूर्वक क्रियान्वयन करने के साथ ही हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ की कक्षाएं भी समयानुसार आयोजित की जाती हैं। यहां मैं आपका ध्यान ऑयल द्वारा असमिया न जानने वाले कार्मिकों के लिए चलाए जाने वाले असमिया प्रशिक्षण कार्यक्रम ''निपुण'' की तरफ आकर्षित करना चाहूंगा। यह कार्यक्रम हमारे इस मत को पुष्ट करने के लिए पर्याप्त है कि भारतीय भाषाओं के साथ ही हिंदी का भी विकास स्वत: ही होता है।

आप के साथ सहर्ष साझा करना चाहूंगा कि इसी असमिया प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए असम साहित्य सभा द्वारा स्थापित ''बरपुजारी पुरस्कार'' इस बार ऑयल इंडिया को प्रदान किया जायेगा। हिंदी के लिए माहौल निर्माण के लिए ऑयल द्वारा गौहाटी विश्वविद्यालय में स्थापित ''श्रीमंत शंकरदेव फेलोशिप'' की भी महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसमें असमिया एवं हिंदी के तुलनात्मक अध्ययन के लिए शोध छात्र को यू.जी.सी. के मानदण्डों के अनुसार छात्र वृत्ति प्रदान की जाती है।

विद्यार्थियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं एवं राष्ट्रीय स्तर पर निबंध प्रतियोगिता, हिंदी काफी टेबल बुक, ऑयल के निगमित गीत का हिंदी में निर्माण, हास्य कवि सम्मेलनों का आयोजन, ऑयल राजभाषा सम्मेलन का आयोजन, राजभाषा संवाद का आयोजन जैसे कुछ उदाहरण हैं जो यह दर्शाने के लिए पर्याप्त हैं कि हम अपने मुख्य व्यवसाय के साथ-साथ हिंदी के सफल कार्यान्वयन एवं विकास के लिए पूर्णत: प्रतिबद्ध हैं।

आप सभी के साथ पुन: सहर्ष साझा करना चाहूंगा कि हमारे प्रयासों को मान्यता प्रदान करते

हुए विश्व हिंदी परिषद द्वारा दिनांक 13 सितंबर को नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में ऑयल इंडिया को राजभाषा के कार्यान्वयन में तकनीकी प्रयोग के लिए गोवा की महामहिम राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा के करकमलों से सम्मानित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा दिनांक 16 सितंबर 2019 को नई दिल्ली में ही आयोजित एक कार्यक्रम में मंत्रालय के सचिव महोदय ने ऑयल इंडिया को राजभाषा कार्यान्वयन के लिए पुरस्कृत किया।

ये पुरस्कार एवं सम्मान आप सभी के सहयोग से ही संभव हो सका है, अतएव आप सभी को बधाई। आप सभी राजभाषा के कार्यान्वयन में अपना योगदान इसी प्रकार करते रहेंगे...

इसी आशा के साथ, इस बार के लिए बस इतना ही।

जय हिंद !!!

दिलीप कुमार भूयां

(दिलीप कुमार भूयां)

अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ऑयल

एवं महाप्रबंधक (जन संपर्क)

देश प्रेम

✍ **नवनीता राजपूत**
सुपुत्री – श्री कमलजीत राजपूत
उप महाप्रबंधक–वेधन (अन्वेषण एवं योजना)
वेधन विभाग, दुलियाजान

इंसान ये तूने क्या किया?

धरती का बँटवारा करते–करते,
तूने कर डाला अपना और भगवान का बँटवारा।
आज पूछे कोई तेरी पहचान,
तू कहे मैं हिंदू, मैं मुसलमान,
महादेव मेरे, नानक मेरे,
क्या तेरे खून में नहीं बहता भारत का खून?

अब तो तू हिंदुस्तानी नहीं,
तू बन चुका है कश्मीरी, पंजाबी, बंगाली,
खुद की पहचान देख रे इंसान!
तुझे वो बचपन की मासूमियत नज़र आएगी,
जिसे ना पता था हिंदू क्या, कश्मीरी क्या।

तू इंसान नहीं, तू जानवर है।
तू तो अब अपने लिए जानवरों को मारता है,
पेड़ों को काटता है।
वाह रे इंसान!
ये तूने क्या किया?
तू तो भारत कहने से डरता है।
अब तो इंसान बिकते हैं,
पैसों के लिए विदेश जाते हैं।
पर क्या कभी तूने सोचने की कोशिश की,
कि विदेशी क्यों भारत आना चाहते हैं?

भारत है, मेरा भारत
तुम क्या जानों,
स्वर्ग से बढ़कर है मेरा भारत।
यहाँ के सारे लोग हिंदुस्तानी,
न कोई हिंदू, ना कोई मुसलमान,
सब आपस में भाई–भाई।

अनेकता में एकता जहाँ बसती है,
वो देश है मेरा भारत।
त्योहारों से सज़ा देश है भारत।
तू क्या जाने, तूने तो अपनी आँखों को ही बंद कर लिया है।
आँख खोल और देख, इस मिट्टी में है तेरी पहचान।

भारत अपने में खास है,
इसने दुनिया को शून्य और 'शैम्पू',
तेरे 'शर्ट' पर लगे ये बटन भी दिए।
हे इंसान! भारत वो देश है,
जिसने तेरे मनोरंजन एवं खेल–कूद के लिए,
कबड्डी, शतरंज, साँप–सीढ़ी जैसे मनोरंजक खेलों का निर्माण किया।
तू शायद जानता नहीं,
तू जिस देश का नाम अपने मुँह से लेने से कतराता है,
उसी भारत देश ने, प्लास्टिक सर्जरी, फ्लश टॉयलेट, सूती कपड़ों
जैसी चीज़ों का विश्व से पहले आविष्कार किया।

हे इंसान शर्म मत कर,
गर्व से कह मैं हिंदुस्तानी हूँ,
मेरे खून में भारत का खून बहता है।
तोड़ दे ये सारी जंजीरे,
भाईचारे से रहना सीख,
जब दौड़ेगा तेरे खून में ऐसा देश प्रेम,
तब कहलाएगा तू असली इंसान।

वो दिन कब आयेगा

✍ **श्रीमती अंजना राजपूत**
पत्नी - श्री कमलजीत राजपूत
उप महाप्रबंधक-वेधन (अन्वेषण एवं योजना)
वेधन विभाग, दुलियाजान

फूलों-सी कोमल और कलियों सी नाजुक होती हैं बेटियाँ।
घर की आन बान और शान होती हैं बेटियाँ।
हँसे तो घरों में बहार, नहीं तो सूनापन दे जाती हैं बेटियाँ।
बेटियों का करो सम्मान, नहीं तो सब त्योहार हो जायेगें बेकार।
कई घरों में अभी भी बेटियों को बोझ समझा जाता है।
अगर ले लें जन्म तो उनका जीना दूभर कर दिया जाता है।
ज़माने की आँधियों से लड़ते हुए जैसे-तैसे, अपने पैरों पर खड़ी हो जायें,
तो ससुराल वाले उनका जीना हराम कर देते हैं।
आग में घी का काम होता है तब, जब जन्म वो भी कन्या को दे देती है।
सोचा है कभी, कन्यायें न हो तो सृष्टि की संरचना का क्या होगा?
हो जाएगा विनाश चहुँ ओर।
बदला है समाज, थोड़ा और बदलने की जरूरत है।
बेटियाँ ले सकें आज़ादी की साँस, घर के बाहर जाएँ तो न अटके उनके माता-पिता की साँस।
ऐसा समाज जिस दिन हो जाएगा, सब तरफ़ सुख-शांति, समृद्धि 'वो' लाएंगी ।
पर वो दिन कब आएगा?
वो दिन कब आएगा?

ग्लोबल वार्मिंग

✍ **पुलक ज्योति शर्मा**
कार्यकारी निदेशक (ओजीपीएल एण्ड पी)
ऑयल गैस पाइपलाइन एवं परियोजना विभाग, दुलियाजान

सुना है कि पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है
ध्रुवीय हिमखंड टूट रहे हैं
हिमालय के ग्लेशियर भी पिघलने लगे हैं
सभी परेशान हैं,
पर मेरे दोस्त चिंता न करो
बढ़ने दो, उष्णता को
पिघलने दो, बर्फ को
ठंड से जकड़े हुए हमारे कंधों को राहत मिलेगी
हमारे हृदय गर्मी से भर जायेंगे
जब हम अपने सिकुड़े हुए हाथों को फैलाकर
एक दूसरे को गले लगा लेंगे ।।

भ्रष्टाचार मुक्त देश

प्रणामी गोंहाई
कनिष्ठ सहायक - ||
आंतरिक लेखा परीक्षा विभाग, दुलियाजान

भ्रष्टाचार से मुक्ति एक अभियान है,
नरेन्द्र मोदी का नारा है।
भ्रष्टाचार दूर कर जीवन के सभी क्षेत्र में
स्वच्छता लाना है।
घूस नहीं खायेंगे,
और ना ही खाने देंगे;
प्रधानमंत्री का ये नारा है ,
हम सबका भी यही प्रण है।
ना भ्रष्टाचार रहेगा,
और ना रहेंगे भ्रष्टाचारी।
जड़ से है इसे उखाड़ फेंकना,
तभी तो एक स्वच्छ भारत मिलेगा,
खुली हवा में सांस लेने का।
नई पीढ़ी की नई उम्मीद बनना है,
स्वच्छता की एक मिसाल कायम करना है।

सूफियाना इश्क़ मेरा

आयुष सोमानी
वरिष्ठ अधिकारी(एफ पी), सामग्री विभाग
दुलियाजान

जब भी देखता हूँ मैं नूरानी चेहरा तेरा,
हर पल तुझमें पाता हूँ अक्स मेरा।
तेरे प्यारे नैन कर देते हैं मुझे पागल,
मेरा दिल तेरी निगाहें कर देती हैं घायल।
अधूरी तू मेरे बिन; तेरे बिना मैं हूँ अधूरा,
मैं हूँ तेरा श्याम; तू है मेरी राधा।
शायर हूँ मैं और तू है शायरी मेरी,
सही न जाए मुझसे; तेरी मेरी यह दूरी।
आकर मुझे अपनी बाहों में भर ले,
अब तो सारे फासले खत्म कर ले।
तेरे सर पर सजेगा मेरे ख्वाबों का ताज,
मेरे दिल पर होगा अब तेरा ही राज।
तेरी हर अदा पर मैं हो चुका हूँ फिदा,
तेरी दीवानगी छायी रहती है अब सदा।
तुझे जितना भी चाहा हमेशा झूमा रब मेरा,
तेरी करता हूँ इबादत; है यह सूफियाना इश्क़ मेरा।

योग – अनमोल रत्न

✍पिंकी कुमारी प्रसाद
क्रय विभाग (कोलकाता कार्यालय)
कोलकाता

आओ चलें योग की दुनियाँ में
तन-मन रोग भगाएंगे, सब मिलकर ध्यान लगायेंगे।
योग करो, मन योग करो
योग की दुनियाँ में खो जायें
योग की हवा बह चली, हमें अरोग्य बनाने को।
योग करो, मन योग करो।
अब जीना है हमें बन निरोग, यही है योग की पहचान।
सब मिलकर योग सिखाएँगें, दुश्मन को दूर भगाएँगे।
योग करो, मन योग करो।
योग है हमारी संस्कृति की पहचान, अरोग्यता है हमारी शान।
अपने को प्रकृति के साथ जोड़ लें
क्यों न इसे अपनी दिनचर्या में जोड़ लें।
आओ, चलो योग की दुनियाँ में।
सभी का दामन छोड़कर, आसन की दुनियाँ में
यह है जीवन का आधार
यह है कर्मठ रहने का औजार
योग करो, मन योग करो।
योग पतंजली की सुगठित तपस्या का प्रताप
योग ॠषि मुनियों के ध्यान का उजला स्तम्भ
योग करो, मन योग करो।
ज्ञान दीप ज्वलित कर, निशा को मिटायेंगे
निशा को मिटायेंगे, आसन से नाता जोड़ेंगे।
योग करो, मन योग करो
आओ चलें योग की दुनियाँ में
आओ चलें प्रकृति की गोद में
योग करो, मन योग करो।

अनकहे पल

✍पिंकी कुमारी प्रसाद
क्रय विभाग(कोलकाता कार्यालय)
कोलकाता

जिन्दगी फिर से दिला दे ना, मुझे वो प्यारी सी यादें।
हर दिन होती थी, जहाँ खुशियों की बौछारे।
रात कटती थी जहाँ ख्वाबों की पलकों में।
जिन्दगी फिर से दिला दे ना मुझे, वो प्यारी सी यादें।
जहाँ हर तमन्ना पूरी हो जाती थी,
जहाँ हर राह खत्म हो जाती थी
जहाँ हर मंजिल मिल जाती थी,
जहाँ खुशियों के साथ ना गम की परछाई थी।
जिंदगी फिर से दिला दे ना मुझे वो प्यारी सी यादें।।
हर लम्हे को जहाँ जिया था मैंने,
हर मुस्कान को जहाँ बाँटा था।
रोई भी तो आँसुओं को खुशी में पिरोया था जहाँ
जिंदगी फिर से दिला दे ना मुझे, वो प्यारी सी यादें।

बेइंतहा

✍प्रतीक बरुवा,
अधीक्षक अभियंता (कंप्रेसर मेंटेनेंस अनुभाग)
गैस प्रबंधन सेवाएँ विभाग
दुलियाजान

शिद्दत से तुम्हे चाहते हैं मगर
लब्जों में इकरार कभी कर ना पायेंगे

कागज में चार लफ्ज चाहत के उतार देते हैं मगर
मोहब्बत के मायनों की तस्वीर, कभी तुम्हें दिखा ना पायेंगे
तुम्हारी हँसी को फ़रक नहीं पड़ता, मेरे आंसुओं का मगर
आंसुओं को तुम्हारे लिए, हम रोक ना पायेंगे

लेट गया हूँ आज कब्र पर, कफ़न ओढ़ कर मगर
अपनी रूह को तुमसे, जुदा कभी न कर पायेंगे

किस्सा कुर्सी का

✍ **निधि जोशी**
पति – रितेश मोहन जोशी, उप महाप्रबंधक (भूभौतिकी)
भूभौतिकी विभाग, दुलियाजान

ये कम्बख्त कुर्सी, देती बहुत कुछ है, ओहदा देती है सम्मान देती है न जाने क्या-क्या देती है। पर बदले में क्या कीमत चुकानी पड़ती है? इस आलेख में यही चर्चा का विषय है।

- कंधे या कमर का दर्द (सर्विकल / लम्बर स्पॉन्डिलाइटिस)
- सर का दर्द (माइग्रेन)
- कब्ज (कॉन्स्टिपेशन)
- शरीर में सूजन (ब्लोटिंग)
- एवम अन्य जीवनशैली से जुड़ी हुई बीमारियां।

कुर्सी के प्यार को किसी दूसरे प्यार से कम आंकने की गलती ना करें। कुर्सी आपको अपने से चिपका के रखती है। कुर्सी आपसे प्यार करती है। क्योंकि प्यार दो तरफा होता है तो आप भी धीरे-धीरे कुर्सी से प्यार करने लगते हैं। यह प्यार धीरे-धीरे आपकी जिन्दगी की गति को धीमा कर देता है।

कौन हैं वो लोग जो इस श्रेणी में आते हैं?

वो लोग जो दिन भर ऑफिस में काम करते हैं और अपने लिए समय नहीं निकाल पाते हैं(या कम समय का बहाना करते हैं)। इस कारणवश दिन में चलना फिरना बहुत कम हो पाता है। एक दिन में कितना चलना चाहिए? क्या है इसका मापदंड? एक अनुमान के हिसाब से, दिनभर में कम से कम दस हजार कदम चलने चाहिए।

समाधान क्या है? समाधान बहुत आसान है।

हर आधे घंटे में थोड़ा चलें, या यूं कहें अपनी पानी की बोतल भरने खुद जाएं, और चाय लेने भी। अपने सहकर्मी को अपनी कुर्सी/कक्ष में बुलाने की जगह खुद उसकी कुर्सी/कक्ष में जाए, जब फोन (मोबाइल) पे बात करें तो बैठे नहीं, चहल-कदमी करते रहें। कुछ भी करें पर हर आधे घंटे में अपने शरीर को गतिशील करें।

चलिए पहले यह जानते हैं की क्यों जरुरी है चलना? या यूं कहें की क्यों जरुरी है कम समय के लिए बैठना?

कहानी बहुत आसान है। जब आप चलते नहीं हैं तो आपके शरीर का चयापचय(मेटाबोलिज्म) धीमा होने लगता है। लैंगरहेंस की द्विपिकाये(मिक्रोकोन्ड्रिए) जो शरीर का बिजलीघर(पावर स्टेशन) है कमजोर होने लगता है। ऐसे में शर्करा(ग्लूकोस) ऊर्जा में तब्दील नहीं हो पाता तथा वसा(फैट) में बदल जाता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि, हर 30 मिनट में अपनी जगह से उठके थोड़ा चल के आया जाए। शोधकर्ताओं द्वारा 8000 वयस्कों पे किये गए एक अध्ययन के अनुसार 'बैठने में बिताया गया समय' और 'खराब स्वास्थ्य के जोखिम' के बीच एक सीधा संबंध पाया, साथ में यह भी निष्कर्ष निकला कि इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता की आप कितना दैनिक व्यायाम करते हैं, लम्बी अवधि तक एक जगह पे बैठना एवम खराब स्वस्थ्य के बीच का सम्बन्ध परस्पर रहता है।

शरीर में और क्या व्यवधान आते हैं? आइये नजर डालते हैं कुछ आंकड़ों पे।

- मोटापे से ग्रसित लोग, सामान्य लोगों की तुलना में 2.5 घंटे अधिक बैठते हैं।
- जिन लोगों का कार्य बैठने का है उनमें खड़े रहके कार्य करने वालों की तुलना में ह्रदय रोग की सम्भावना दुगुनी होती है।

बैठते ही

- पैर की मांसपेशियों में विद्युत की गतिविधियां बंद हो जाती है।
- कैलोरी इस्तेमाल की दर 1 प्रति मिनट तक घट जाती है।
- वह एन्जइम्स जो वसा को कम करने में मदद करता है, 90% तक घट जाता है।

2 घंटे बाद

- स्वस्थ्य कोलेस्ट्रॉल 20% तक घट जाता है।

24 घंटे बाद

- इंसुलिन की प्रभावशीलता 24% तक घट जाती है और इस तरह रक्त शर्करा के स्तर के साथ हस्तक्षेप होने लगता है और मधुमेह का खतरा बढ़ जाता है।
  - जो लोग 3 घंटे या अधिक प्रतिदिन टीवी देखने बैठते हैं, उन्हें दिल की बीमारी होने की संभावना 64% अधिक होती है।
  - जो व्यायाम करते हैं लेकिन टीवी के सामने 3 घंटे बिताते हैं उन्हें भी दिल की बीमारी होने की संभावना 64% ही होती है।
  - प्रत्येक अतिरिक्त 1 घंटे टीवी देखने पर 11% और जोड़ें।

ज्यादा देर बैठने से और क्या फ़र्क पड़ता है?

- निद्रा में व्यवधान, तनाव, चिड़चिड़ापन, जल्दी गुस्सा आना आदि।

कुछ घरेलु उपचार (दादी माँ के नुस्खे) जो काफी कारगर होते हैं। जैसे की...

- शाम को धनिये के दाने या सौंफ भीगा ले और सुबह-सुबह

इसका जल ग्रहण करें, सेब का सिरका (एप्पल साइडर विनेगर) का सुबह-सुबह सेवन करें।

- हफ्ते में एक बार अपने पैरों की नारियल या तिल के तेल की मालिश करें ।
- कुर्सी में बैठे-बैठे अपने पैर को उठाये एवं पंजे को घड़ी की दिशा एवम उलटी दिशा में 20 बार घुमायें। यह अनुदेश बिलकुल उस प्रकार है जैसे लम्बी दूरी की हवाई यात्रा के दौरान हवाई जहाज के अनुदेश पत्र में लिखे रहते हैं। क्यों होता है यह जरुरी ? क्योंकि ज्यादा देर बैठने से पैरों में खून के थक्के जमने लगते हैं जिसे डीवीटी या डीप वेन थ्रोम्बोसिस भी कहते हैं! हालांकि डीवीटी 7-8 घंटे लगातार बैठने से होता है तो कार्यालय के सन्दर्भ में संभव नहीं है पर इस जोखिम को समझना उचित होगा।

अन्तोगत्वा:

मनुष्य गतिशील प्राणी है, लेकिन आधुनिक संसाधनों जैसे टीवी, संगणक (कंप्यूटर), वाहन आदि ने मनुष्य को ज्यादा देर तक बैठने के लिए मजबूर कर दिया है। ये शरीर के लिए बेहद नुकसानदेय साबित हो रहा है। पहले वजन में बढ़ोतरी, फिर आसन (पोस्चर) में गड़बड़ी और अंतत: जीवनकाल में घटाव ।

पुनश्च: गतिशील बने, गतिवान बने। स्मार्ट फोन का जमाना है, ना जाने कितने अच्छे ऐप्स है जो इस सन्दर्भ में आपकी मदद कर सकते हैं। अत: स्मार्ट बने।

आहार विशेषज्ञ एवम परामर्श पोषण विशेषज्ञ

पी. जी. एफ. एंन. (अमेरीका); पी. जी. डी. पी. एच. एंन.; बी. एस. सी. एवम मेटाबोलिक कोच

विनोबा वाणी

मैंने हिंदी का सहारा न लिया होता तो कश्मीर और असम से केरल के गांव-गांव में जाकर मैं भूदान ग्राम दान का क्रांतिपूर्ण संदेश जनता तक न पहुंचा सकता। यदि मैं मराठी का सहारा लेता तो महाराष्ट्र से बाहर और कहीं काम न बनता। इसी तरह अंग्रेजी भाषा लेकर चलता तो कुछ प्रांतों में चलता, परंतु गांव-गांव में जाकर क्रांति की बात अंग्रेजी द्वारा नहीं हो सकती थी। इसलिए मैं कहता हूं कि हिंदी भाषा का मुझ पर बहुत बड़ा उपकार है, इसने मेरी बहुत बड़ी सेवा की है।

प्रत्येक प्रांतीय भाषा का अपना स्थान है। मैंने अनेक बार कहा है कि जिस प्रकार मनुष्य को देखने के लिए दो आंखों की आवश्यकता होती है, उसी तरह राष्ट्र के लिए दो भाषाओं, प्रांतीय भाषा और राष्ट्र भाषा की आवश्यकता होती है। इसलिए हम लोगों ने दो भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य माना है। भगवान शंकर का एक तीसरा नेत्र था जिसे ज्ञान नेत्र कहते हैं। इसी तरह हम लोगों को भी तीसरे नेत्र की जरूरत अनुभव हो तो संस्कृत भाषा का भी अध्ययन लाभकारी सिद्ध होगा और उस समय अंग्रेजी भाषा चश्मे के रूप में काम आएगी। चश्मे की जरूरत सबको पड़ती है। हां कभी कुछ लोगों को उसकी जरूरत पड़ती है। बस इतना ही है अंग्रेजी का स्थान। इससे अधिक नहीं। इसलिए मैं चाहता हूं कि हिंदी का प्रचार अच्छी तरह व्यापक रूप में होना चाहिए।

आखिर बच्चे खेले कहां

✍ **रिंकू बोरा**
वरिष्ठ जन संपर्क अधिकारी
जन संपर्क विभाग, दुलियाजान

क्या आप ऊपर की तस्वीरों को देख कर ये सोच रहे हैं – शायद ये Marvel कॉमिक्स के जाने माने चरित्र प्रोफेसर जेवियर की बचपन में ली गयी तस्वीर है। जी हां, वही प्रोफेसर जेवियर जिनके हाथों में बेशुमार चमत्कारी ताकतें हैं। और जो अपने दिमाग से दुनिया को काबू में कर लेते हैं।

दरअसल, ये तस्वीर राकेश की है। राकेश की उम्र दस साल है और वो दिल्ली के नरेला इलाके में रहता है। राकेश अपने सर पे ये फुटबॉल पहनकर अपने आप को आईने में देखकर प्रोफेसर ज़ेवियर ही समझता होगा, मुमकिन है राकेश ने कहीं कॉमिक्स में प्रोफेसर जेवियर की कहानी पढ़ी होगी।

राकेश को फुटबॉल खेलना पसंद है। लेकिन उसके घर के आस-पास कोई भी खेलने का मैदान नहीं है। कुछ सालों पहले वह फुटबॉल खेलता था, वहां अब गगनचुंबी इमारत बन गयी है।

राकेश की आँखों में आज भी उम्मीद दिखाई पड़ती है। उसे एक नया खेल का मैदान मिलेगा, वो फिर से फुटबॉल खेलेगा।

इस दूसरी तस्वीर में कुछ बच्चे नरेला में ही स्थित एक गोडाउन के बाहर खेलते नजर आ रहे हैं।

नीचे की तस्वीरें महानगरी दिल्ली से लगभग उन्नीस सौ किलोमीटर दूर असम की प्रेम नगरी तेजपुर से है। खेल का मैदान ना होने की वजह से इन बच्चों ने सड़क को ही खेल का मैदान बना लिया है। जब मैदान ही नहीं हैं, तो बच्चे खेले कहां?

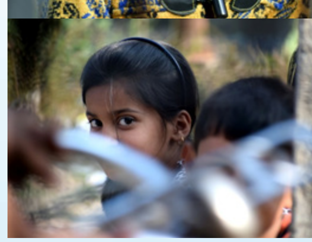

ये तस्वीरें एक ही सच बयान करती है - बात दिल्ली की हो या तेजपुर की, हम बच्चों से उनका खेल का मैदान छीन रहे हैं। क्या शहरीकरण के चलते हम ये भूल गए हैं की बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए खेल कूद भी जरूरी है।

भारत में बच्चे देश की कुल जनसंख्या का चालीस प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं। और चूंकि उन्हें मतदान का अधिकार नहीं है, तो अपनी बात नहीं रख सकते हैं। अंतर्राष्ट्रीय संस्था संयुक्त राष्ट्र (UN) द्वारा घोषित, NCRC (UN Convention on the Rights of the child) के आर्टिकल 31 के मुताबिक 'खेल कूद और आराम करना' बच्चों का अधिकार है और देशों ने इसे माना भी है।

हम सभी को जिम्मेदारी निभानी होगी और ये निश्चित करना होगा कि बच्चों से उनका खेल का मैदान ना छीना जाये, खेलने के अधिकार का उलंघन ना हो।

यह सराहनीय है कि ऑयल इंडिया लिमिटेड जैसे सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम अपने सीएसआर गतिविधियों के तहत परिचालन क्षेत्र में स्थित स्कूलों को खेल का मैदान विकसित करने में आर्थिक सहयोग करता है। इसके अलावा ग्रामीण खेलों के संवर्धन हेतु भी जितना संभव हो आर्थिक सहयोग करता है।

पीढ़ी अंतराल

✍सत्येन्द्र कुमार शर्मा
मुख्य अभियंता (उत्पादन सेवाएं)
उत्पादन सहायक सेवाएं विभाग, दुलियाजान

पीढ़ी का अंतराल या जेनरेशन गैप एक प्राकृतिक सतत् क्रिया है। पीढ़ी का अंतराल सदियों से समाज में स्थापित है। हर आनेवाली पीढ़ी अपने पूर्वजों या पुरानी पीढ़ी के क्रिया कलाप, रीति रिवाज या सोच से काफी अंतर रखती है - जिसे हम पीढ़ी का अंतराल कहते हैं। 19वीं सदी की बातें, 20वीं सदी से भिन्न एवं 20वीं सदी की बातें, 21वीं सदी से भिन्न होती है - जिसे सब लोग महसूस करते हैं। आधुनिकता के इस युग की सोच पुरानी सोच से कितना भिन्न है इसका अनुमान हर 45-50 वर्ष पहले जन्में लोगों के विचारों एवं क्रिया कलापों से पता चलता है। प्रस्तुत लेख में आजकल की आधुनिक पीढ़ी बनाम पुरानी पीढ़ी के विचारों का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है :-

याद आता है स्कूल के वो दिन जब हमें डाँट कर या दो-चार तमाचे मार कर उठाया जाता था। ठंड के दिनों में भी हमारे ऊपर पानी फेंक दिया जाता था - जब हम उठने में आना-कानी करते थे। उठते ही कम से कम एक घंटा या तो पढाई या घर के कामों में हाथ बटाना हमारा प्रमुख कर्तव्य होता था। माता-पिता के दिए हुए किसी भी कार्यों में कुछ कतरब्योंत नहीं हो सकती थी। आना कानी का मतलब या तो डाँट या फिर मार ही होता था। नलके से पानी भरना, स्कूल ड्रेस खुद स्त्री करना, अपना होमवर्क खुद करना एवं नहा धोकर खुद तैयार होने के पश्चात् स्कूल जाना। स्कूल में दोस्तों के साथ मस्ती, खेलकूद एवं पढ़ाई हमारा ध्येय होता था। शिक्षकों की घुड़कियाँ एवं मार भी माता-पिता को विचलित नहीं करती थी। वरन हमारे माता-पिता तो ऐसे थे कि यदि उन्हें पता चल जाए कि आज फलाना शिक्षक ने उनके बच्चों को मारा है तो एक झापड़ उस बच्चे को और जड़ देते थे। शिक्षकों की कोई गलती भी हो सकती है इसकी परिकल्पना भी नहीं की जा सकती थी। समान्यत: बच्चे स्कूल की डाँट-मार अपने तक ही सीमित रखते थे।

दूसरी बात खाने-पीने को लेकर आजकल के युग एवं हमारे जमाने में जो विचार थे, उनमें जमीन आसमान का अंतर हो गया है। पहले हमारे खान-पीने का पूरा इंतजाम हमारे माता-पिता अपनी इच्छानुसार गुणवत्ता को ध्यान में रखकर समयबद्ध तरीके से किया करते थे। अन्न, फल, दूध, मिठाई मुख्य रूप से होते थे। खाने के समय पूरा परिवार जमीन पर पालथी मार के बैठ जाता था एवं मां, अन्नपूर्णा के रूप में अपने हाथों द्वारा बनाया गया खाना परोसती थी। मां के खाने में कभी मीन मेख नहीं निकाला जाता था। जो बना है, जितना बना है वही हमारे पेट भरने का साधन था बाहर का खाना सिर्फ मेलों में जाने पर ही मिलता था। हमारे युग के बच्चे पेट भर अन्न खाकर दिन भर के क्रियाकलापों में जुटे रहते थे। फिर जब भूख लगी तो खाने के रूप में अन्न ही मिलता था।

आजकल भी माता पिता ही बच्चों के खाने पीने का इंतजाम करते हैं किंतु सब बच्चों के इच्छा अनुसार होता है। गुणवत्ता को ताक पर रखकर बच्चों को जो पसंद हो उसे प्रचुर मात्रा में दिया जाता है। जैसे-चॉकलेट, चिप्स, चाऊमीन, रोल एवं अन्य फास्ट फूड इत्यादि जिनमें गुणवत्ता से ज्यादा स्वाद पर जोर दिया जाता है। बिना किसी मनोरंजन के साधन के बच्चे खाना नहीं खा सकते, या तो मोबाइल या वीडियो गेम या टीवी देखते हुए खाने का निवाला गटका जाता है। यदि खाना बच्चे के इच्छा अनुसार ना हो तो उस खाने का कोई मोल नहीं होता। आजकल की पीढ़ी फास्ट फूड

जितने चाव से खाती है उसे देखकर ऐसा लगता है जैसे कुछ समय पश्चात अन्न. फल या सब्जियों की जगह फास्ट फूड पैकेट ही घर पर रखना पड़ेगा। बच्चे ने जैसे ही कुछ खा लिया लगता है मां पिता ने स्वर्ग पा लिया हो।

अब कुछ बातें खेलकूद से संबंधित। पहले हमारे खेलकूद घर के बाहर मैदानों में होते थे। सारे खेलों में दौड़ भाग एवं शारीरिक व्यायाम शामिल होते थे। घर के भीतरी खेलों में भी क्विज़, शतरंज, चाइनीस चेकर, लूडो आदि मस्तिष्क के विकास को लेकर प्रयत्न किए जाते थे। परिवार के प्रत्येक सदस्य घर के अंदर ही हो रहे खेलों में हिस्सा लेते थे। लेकिन आजकल बच्चे अपने दायरे में सीमित रह कर मोबाइल, वीडियो या टेलीविजन में हो रहे खेलों में ही अपना ज्यादातर समय बिताते हैं। गर्मी हो तो ए.सी. घरों में एवं सर्दियों में कंबल एवं कन्वैक्टर के वातावरण में घर के अंदर ही सारे खेलों का निष्पादन करते हैं। घर से बाहर जाकर दोस्तों के साथ शारीरिक क्रिया वाले खेलों का लगभग लोप सा हो गया है।

फिर आता है – संगठित परिवार एवं एकाकी परिवार से संबंधित। पहले लगभग प्रत्येक घरों में संपूर्ण परिवार जिसमें कम से कम तीन पीढ़ी निवास करती थी। दादा–दादी, नाना–नानी, माता–पिता, एवं बच्चे। आजकल एकाकी परिवार का दौर है। जिसमें 3 या 4 सदस्यों वाले परिवार होते हैं। माता–पिता एवं उनके एक या दो बच्चे। दादा–दादी एवं नाना–नानी से भरपूर परिवारों में बच्चे अक्सर बुजुर्गों की देखरेख एवं सानिध्य में अपने जीवन मूल्यों को समझते हुए सीखते हैं। बुजुर्ग अपने जीवन के अनुभव से सीखे हुए विचारों से परिवार का सेहत कर आगे बढ़ने का रास्ता दिखाते हैं। यही मुख्य कारण था कि उस समय बच्चों में किसी भी प्रकार के मानसिक रोग के बारे में सुनने को नहीं मिलता था। माता–पिता भी अपने बुजुर्गों के दिखाए रास्ते पर चलते थे एवं कभी उनके विचारों पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगाते थे। आजकल बच्चे माता–पिता को अपनी बातें थोपते हैं और उन्हें पूरा ना होने की स्थिति में खुद को दोषी मानकर सजा देते हैं। बच्चों के मुख से निकली हर बात जैसे मां बाप का परम कर्तव्य है। माता–पिता के विचारों में प्रश्न चिन्ह लगाना आजकल के बच्चों में बहुतायत पाया जाता है।

रही बात पढ़ाई लिखाई से संबंधित। इसमें दो मत नहीं है की आजकल के बच्चों का मानसिक विकास एवं परिकल्पना पुराने पीढ़ी के बच्चों से कहीं ज्यादा है। लेकिन समय एवं उम्र के साथ आए विचारों एवं अनुभव की परिपक्वता में कहीं कमी सी लगती है। बच्चों में परिकल्पना बहुतायत में पाई जा रही है जो उन्हें उत्श्रंखल एवं जिद्दी बनाती है। माता–पिता उन बच्चों की परिकल्पना में एक सीढ़ी या कमजोर कड़ी सी है जिन्हें लांघ कर अपनी इच्छाओं को पूरा करना है। मां बाप के संसाधनों का दायरा, बच्चों के समझ के परे हैं। उन्हें हर हाल में अपनी इच्छाओं को पूरा करना है। उन्हें ज्यादातर अपने सुख सुविधाओं का ख्याल रहता है।

और हां, एक बात और जिस प्रकार की विकसित बुद्धि, विचार और परिकल्पना लेकर आजकल के बच्चे स्कूली शिक्षा आरंभ करते हैं, उसमें 'बहस' पूरे प्रमाण एवं तर्क के साथ करने की इच्छा शक्ति बढ़ गई है। मां–बाप के हर विचारणीय संदेश एवं आदेश को तर्क की कसौटी पर रखकर गलत साबित करने की प्रबल इच्छा भी बढ़ गई है। पहले बुजुर्गों की जिस सलाह को लोग ज्ञान के रूप में लेते थे, उन्हीं सलाहों का मजाक सा बनता दिख रहा है। धैर्य, अनुशासन की जिस शिक्षा को हम प्राप्त कर एक निश्चित दिशा में बढ़ते थे वहीं इसका रूप अधैर्यता एवं अनुशासनहीनता ने ले लिया है।

छोटी–छोटी बातों पर रूठ कर गलत कदम उठा लेना, जैसी घटनाएं हमारे समाज में पैदा हो रहीं हैं। बुजुर्गों की घुड़कियाँ एवं मार खाकर हमने अपना रास्ता बनाया है उससे भी कम, सिर्फ सही बात समझाने पर भी बच्चों में रोष, गुस्सा एवं गलत कदम सामने आ जाते हैं। सामान्यत: यह देखा गया है कि अक्सर बच्चे अपने मां–बाप की वस्तुस्थिति न समझते हुए अपनी इच्छाओं पर सवार होकर आगे बढ़ते हैं एवं मुंह की खाते हैं।

इसमें कोई दो मत नहीं है कि आधुनिक युग एवं पुराने समाज में व्याप्त कुरीतियों का नाश हुआ है। हमारे समाज में व्याप्त जातिप्रथा, दहेज एवं विधवा विवाह जैसी कुरीतियों का अंत हुआ है। साथ ही साथ पुराने जमाने में व्याप्त लड़के लड़कियों में भेदभाव एवं अंतर में कमी आई है। युवा पीढ़ी चाहे तो जिस किसी भी धर्म, भाषा, जाति एवं प्रदेश स्थान के हों, उन्हें कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ने के लिए रास्ते प्रबल हैं। इतने बड़े देश में फैले जनसंख्या, साक्षरता दर एवं रीति–रिवाजों को साथ लेकर भारत अपने प्रगति पथ पर अग्रसर है।

आज की पीढ़ी को कुछ अच्छी बातें – आज की पीढ़ी काफी आत्मविश्वासी है। अनजान क्षेत्रों में भी अपने कदम रखने से पीछे नहीं हटते हैं। साहस एवं सूझबूझ की कोई कमी नहीं है। आधुनिक युग के सभी उपकरणों के इस्तेमाल की विधि एक छोटे बच्चे से भी पूछी जाए तो बता देता है। लड़के लड़कियों में भेद न करने वाला, जात पात को न मानने वाला एवं ईमानदारी से चलने वाला, आजकल के युवा युवतियों की विशेषता है।

अब युवा पीढ़ी बनाम पुरानी पीढ़ी – पुरानी पीढ़ी के जीवन से हमें मेहनत करने की आदत, धैर्य रखने की कला एवं अनुशासित जीवन(कम से कम में जीने की कला) व्यापन करने का मंत्र मिलता है। मानव जीवन के मूलभूत स्वभाव (BASIC) कभी बदलते नहीं। शारीरिक मेहनत से शरीर सुखी होता है, धैर्य अपनाने से दुख की घड़ी में भी मन शांतचित रहता है एवं अनुशासित जीवन से कार्य क्षेत्रों में अतुलित योगदान मिलता है जिससे स्वयं व्यक्ति, समाज एवं देश प्रगतिशील होता है।

पुराने पीढ़ी का भले ही आई. क्यू.(intelligent quotient)

कम हो लेकिन ई. क्यू(emotional quotient) और एस. क्यू. (spritiual quotient) में बहुत आगे हैं। आज की पीढ़ी को चाहिए कि वह पुराने पीढ़ी के ई. क्यू और एस. क्यू को अपने आई. क्यू से मिलाकर आगे चलने की सीख लें। आत्मविश्वासी आज के युवा अगर धैर्यशील पुराने पीढ़ी के कुछ गुणों को अपना कर चले तो वह दिन दूर नहीं जब इस देश का हर युवा पीढ़ी एवं बालक कर्णधार होगा एवं देश स्वतः अपने प्रगति के रास्ते पर आगे बढ़ जाएगा।

समाज और पीढ़ी के इस बदलाव का जिम्मेदार कौन? स्पर्धा के इस दौर में, जहां माता-पिता अपने बच्चों को सर्वोत्तम चीजें या वस्तुएं देना चाहते हैं,वहीं बच्चे भी जल्द ही जल्द सफल होने की होड़ में लगे रहते हैं। तत्काल हल(quick solution) आजकल के मां बाप के लक्ष्य होते हैं। अपने-अपने कामों में व्यस्त होने के कारण, मां-बाप अपने बच्चों को पूरा समय नहीं दे पाते हैं। इसलिए उन्हें लगता है कि बच्चों की जरूरतों को किसी भी कीमत पर जल्द ही जल्द पूरा कर दें। मुझे एक सच्ची घटना याद आ रही है। मैं अपनी धर्म पत्नी के साथ एक बार डॉक्टर के पास गया और बोला कि मेरे बच्चे ठीक से खाना नहीं खाते हैं। उन्हें चिप्स, कुरकुरे और अन्य फास्ट फूड ही बहुत पसंद है जिससे अक्सर बच्चे कमजोर और बीमार से रहते हैं। डॉक्टर ने तत्काल पूछा, क्या आपके बच्चे चिप्स,कुरकुरे या अन्य फास्ट फूड खुद खरीदते हैं? यह आत्मज्ञान प्रश्न है। तब हम लोगों ने महसूस किया कि आजकल के बच्चों के कुछ कमियों के जिम्मेदार मां बाप स्वयं है।

अक्सर माता-पिता की यह शिकायत रहती है कि उनके बच्चे हमेशा मोबाइल फोन और टेलीविजन के प्रोग्राम देखने में अपना समय बिताते हैं। उनमें पठन-पाठन की क्षमता एकदम से कम है। इस संदर्भ में, यह उल्लेख करना उचित जान पड़ता है कि बच्चे मां-बाप के क्रियाकलापों एवं व्यवहार का अनुकरण करते हैं। यदि स्वयं माता-पिता मोबाइल फोन या टेलीविजन के प्रोग्रामों में लगे रहेंगे तो बच्चे उनका अनुसरण करेंगे। यदि माता-पिता अपना कुछ समय पठन-पाठन में व्यतीत करेंगे तो बच्चे स्वयं ही उनका अनुकरण करेंगे। यदि मां-बाप बच्चों को व्यस्त करने के लिए मोबाइल फोन देते हैं तो बच्चे स्वतः प्रत्येक कार्य के लिए मोबाइल फोन की मांग करेंगे।

उपरोक्त लेख में मेरा उद्देश्य पीढ़ी के अंतराल को ही दोषारोपण करके यदि हम अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ लेंगे तो शायद यह उचित न होगा। नई पीढ़ी के उत्थान एवं सर्वांगीण विकास की जिम्मेदारी भी हमारी पीढ़ी की है। उनमें नवचेतना, उत्साह एवं समाज से जुड़े रहने की प्रेरणा,खुद को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करके दे सकते हैं। हमें हमारे बच्चों की भावनाओं को समझने की जरूरत है। नये बच्चे का मस्तिष्क एक खाली पटल जैसा होता है, उसमें जो रंग हम भरेंगे, वही रंग बच्चों में उभर कर सामने आएगा। बच्चों के मन तरंग में जो तार छेड़ेंगे, उसी की ध्वनि संसार में सुनाई देगी।

संस्थागत संदर्भित एवं संवैधानिक अधिकार-मतदान के अधिकार विषयक पूर्वनिर्धारित समागम

✍ **कुमार साल्व रघुवंशी और कौशिक रंजन राजखोवा**

हम, भारत के लोग, भारत को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए.....अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करने का संकल्प लेते हैं, ये स्वर्णिम शब्द एक पवित्र पावन मूलभूत प्रलेख, हमारे विश्वसनीय घोषणापत्र, 'भारत के संविधान' से लिए गए हैं। प्रजातांत्रिक और गणतांत्रिक अर्थात प्रजातंत्र और गणतंत्र, संविधान की स्थापना के समय से प्रस्तावना में स्थापित हैं, जो भारत की सार्वजनिक भागीदारी के प्रतीक के रूप में संविधान सभा के पवित्र दृष्टिकोण को दृष्टिगोचर करते हैं।

वह आधार जिस पर भारतीय प्रजातंत्र स्थापित है, वह विविधता के सम्मान और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर संकेंद्रित है। वास्तव में यह एक स्थापित तथ्य है कि, भारत में चुनाव लोकतंत्र के त्यौहार स्वरूप है, परंतु इसके साथ-साथ ये भारतीय लोकतंत्र के सभी हितधारकों-राजनीतिक दल, जनसंचार माध्यम, चुनाव प्रक्रिया के संचालक प्राधिकरण और सर्वोपरि, वास्तविक मतदाताओं के लिए भी एक सच्चरित्र आत्मनिरीक्षण का अवसर है।

भारतीय लोकतंत्र में, सभी नागरिकों के पास उनके धर्म, जाति, रंग और दमन संबंधी पूर्वस्थिति को आधार माने बिना, मतदान करने का अधिकार है। भारतीय निर्वाचन आयोग, एक ऐसी संस्था जिसे चुनाव आयोजित करने के कर्तव्य का पालन करने के लिए स्थापित किया गया है तथा संविधान संबंधी अधिनियम (61वां संशोधन), 1988 के अनुसार, 18 वर्ष की आयु के पश्चात नागरिक मतदाता बनने के पात्र होते हैं, जब तक कि वे किसी भी प्रकार से अयोग्य न हो। वर्ष 1988 के इस अधिनियम से पूर्व, 21 वर्ष की आयु के पूर्ण होने के पश्चात ही मतदान करने का अधिकार प्रदान किया गया था। यदि हम ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में खोजें और अपने अवचेतन का आत्मसात करें, तब उस स्थिति के संदर्भ में हमारे मनो-मस्तिष्क

में जो प्रश्न उत्पन्न होता है, वह यह है कि वर्ष 1985 में भारत की मतदान संबंधी आयु को प्रथमत: 21 से घटाकर 18 वर्ष क्यों किया गया था ? हमें स्वयं को वर्ष 1985 के समय में ले जाना होगा और इसका स्पष्ट कारण राजीव गांधी सरकार की शानदार जीत और अंतर्राष्ट्रीय युवा वर्ष को मनाया जाना था, जिसमें मतदान की आयु को 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष करते हुए संविधान में संशोधन किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप चुनाव आयोग के अंतर्गत 'युवा (मतदाता जागरूकता हेतु युवा एकता) अभियान आयोजित किया गया, जो प्रत्यक्षत: इनके अंतर्गत कार्य कर रहा था:

क राष्ट्रीय युवा नीति 2003

ख राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1992; और

ग समावेशी राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से युवाओं को सशक्त बनाने हेतु वर्ष 2000 का संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दि विकास लक्ष्य।

प्रजातंत्रों का पुन:एकीकरण : एक दृष्टिकोण :

लियोन डुगिट (एक फ्रांसीसी दार्शनिक और न्यायविद) के शब्दों में, ''एकमात्र अधिकार, जो किसी भी व्यक्ति के पास हो सकता है, वह है सदैव अपने कर्तव्य का निर्वाह करने का अधिकार'', तथापि, लेखकों द्वारा इसके लिए शीर्षक के रूप में ''मतदान का अधिकार'' को चुना गया है; परंतु इसका वास्तविक अर्थ डुगिट के विचार में ही निहित है। जिसका तात्पर्य है, चुनाव के दौरान मतदान करना किसी भी व्यक्ति का एक संवैधानिक विशेषाधिकार है, जिसे कर्तव्य के रूप में परिबद्ध किया गया है।

और ''वोट देने के अधिकार'' को किसी भी देश के मतदान का महत्व बेकर बनाम कैर, 369 यूएस 186 के मामले में अमरीकी उच्चतम् न्यायालय द्वारा दिए गए एक ऐतिहासिक निर्णय में प्रतिबिंबित होता है, जस्टिस ब्रेनन की अगुवाई में 5 न्यायविदों की बहुमत राय द्वारा किसी भी प्रतिनिधिक लोकतंत्र में नागरिकों के सर्वाधिक मूल्यवर्द्धित अधिकार अर्थात वोट देने के अधिकार को समर्थन प्रदान किया गया। इस मामले ने इसके पश्चात के समय में एक कीर्तिमान स्थापित किया और 'वोट देने का अधिकार' को किसी भी देश के नागरिक के सबसे बड़े नागरिक अधिकार के रूप में स्थापित किया।

भारतीय कानून प्रणाली और संवैधानिक संरक्षण के अधिकार क्षेत्र ने 67 वर्ष की अवधि तक मतदान के अधिकार की अवधारणा को संवैधानिक अधिकार का एक स्वरूप माना है, जैसा कि एन. पी. पोन्नुस्वामी बनाम निर्वाचन अधिकारी (1952 एआईआर 64) के मामले में निर्धारित किया गया था, जिसमें न्यायालय द्वारा सुनिश्चित किया गया था कि ''चुनाव के लिए मतदान करने अथवा उम्मीदवार के रूप में खड़े होने का अधिकार किसी प्रकार का नागरिक अधिकार नहीं है, बल्कि यह संवैधानिक अथवा विशेष कानून का एक सृजन है और यह इनके द्वारा लागू सीमाओं के अधीन ही होना चाहिए''; और अब इसका पुन:उद्भव एक प्रवर्तनीय मौलिक अधिकार के रूप में हो रहा है, जिसे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19(1) (क) के तहत आश्वस्तता के रूप में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए केन्द्रीय रूप से अंकित किया गया है, और इसके पश्चात इसे पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज बनाम यूनियन ऑफ इंडिया (2013) 10 एससीसी 1 के एक ऐतिहासिक मामले में भी दोहराया गया, जिसके अंतर्गत दिए गए निर्णय ने व्याख्या के एक स्वर्णिम नियम को आकार देते हुए शंकाओं को स्पष्ट कर दिया और यह बताया कि किसी भी मतदाता द्वारा उम्मीदवार की साख को सत्यापित करने के पश्चात, उसके लिए मतदान करने अथवा न करने के लिए लिया गया निर्णय संविधान के अनुच्छेद 19(1)(क) के तहत अभिव्यक्ति का एक स्वरूप है। आरपी अधिनियम की धारा 79(घ) के तहत दिए गए संवैधानिक अधिकारों के साथ पठित अनुच्छेद 19(1)(क) के तहत मौलिक अधिकार का अनुचित रूप से उल्लंघन होता है, यदि मतदान को प्रभावी स्वरूप से करने के अधिकार से वंचित किया जाता है और गोपनीयता भंग की जाती है।

इस प्रकार, मतदान के अधिकार, वयस्क मताधिकार के आधार पर लोक सभा तथा राज्य विधानसभा के लिए चुनाव से संबंधित संक्षिप्त भूमिका के तहत संविधान के अनुच्छेद 326 से प्राप्त किए गए। इसके महत्व को अनुभव करने के उक्त अधिकार दो भिन्न मार्गों का अनुभव करते हैं, इनमें से एक, मात्र संवैधानिक अधिकार की स्थिति है; और दूसरी, राष्ट्र की न्यायिक शाखा की उचित व्याख्या द्वारा मौलिक अधिकार के स्तर को प्राप्त करना है। पार्श्विक भाग जो मतदान से संबंधित है, वह व्यापक रूप से प्रभावी है और इसमें अवसरवादी विशेषताओं से युक्त भावी सरकार को लाने में लोगों की भागीदारी सम्मिलित होती है।

मतदान विषयक अंतर्राष्ट्रीय न्यायशास्त्र :

लोक संकेंद्रित-राजनीतिक भागीदारी के महत्व का आधार, राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से नागरिक बहिष्कार के भयावह प्रभाव के कारण 18वीं शताब्दी से अत्यंत पूर्व अंतरराष्ट्रीय समुदाय के दिग्गजों के नेतृत्व में किया गया एक आंदोलन था। इसने अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक समावेशी राजनीतिक भागीदारी सिद्धांत स्थापित किया, जिन्हें तत्पश्चात मानव अधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के रूप में उल्लिखित किया गया, जिसे अनुच्छेद 21 के तहत इस प्रकार प्रदान किया गया है:

1 प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश की सरकार में, प्रत्यक्षत: अथवा स्वतंत्र रूप से चयनित प्रतिनिधियों के माध्यम से भाग लेने का अधिकार प्राप्त होता है।

2 प्रत्येक व्यक्ति को अपने देश में सार्वजनिक सेवा हेतु समान पहुंच का अधिकार प्राप्त होता है।

3 जनसामान्य की अभिच्छा राजकीय प्राधिकरणों का आधार

होगी; इसे आवधिक और वास्तविक चुनावों में सार्वभौमिक और समान मताधिकार के माध्यम से व्यक्त किया जाएगा और इनका आयोजन गुप्त मतदान अथवा समकक्ष मुक्त मतदान प्रक्रियाओं द्वारा किया जाएगा।

इस पर विचार करते हुए, अनुच्छेद25 के तहत नागरिक और राजनीतिक अधिकारों से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (आईसीसीपीआर) द्वारा यह गारंटी प्रदान की गई है कि, ''प्रत्येक नागरिक को किसी भी प्रकार के भेद के बिना और अनुचित प्रतिबंध के बिना अनुच्छेद 2 में उल्लिखित ये अधिकार और अवसर प्राप्त होंगे:

क सार्वजनिक मामलों के संचालन में भाग लेने के लिए, प्रत्यक्ष अथवा स्वतंत्र रूप से चुने गए प्रतिनिधियों के माध्यम से;

ख मतदान करने के लिए और वास्तविक आवधिक चुनावों में चुने जाने के लिए, जिसे सार्वभौमिक और समान मताधिकार और जिन्हें गुप्त मतदान द्वारा आयोजित किया जाएगा, जो निर्वाचकों को इच्छा की स्वतंत्र अभिव्यक्ति की गारंटी प्रदान करते हैं;

ग पहुंच प्राप्त करने के लिए, अपने देश में सार्वजनिक सेवा के लिए समानता की सामान्य शर्तों के आधार पर।'' और तत्पश्चात

वे गारंटियां जो किसी भी राष्ट्र के प्रत्येक जनसामान्य के लिए सबसे आवश्यक बुनियादी मानवाधिकार हैं इनके अलावा उपर्युक्त दोनों ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन हैं। इसकी निरंतरता में, यह अभिव्यक्ति भी उतनी ही महत्वपूर्ण है कि, विधान तैयार करने के अधिकार के समान, किसी भी चुनाव में मतदान करने के अधिकार को हमारे पवित्र संविधान के संरक्षण में उच्च महत्व प्रदान करते हुए सर्वाधिक पवित्र विशेषाधिकार के रूप में व्यवहारित किया जाना चाहिए, जिससे कोई भी मतदाता वंचित नहीं रहना चाहिए।

चुनाव के सिद्धांत :

लोकतांत्रिक चुनावों का व्यापक दर्शनशास्त्र, जिसे सर विंस्टन चर्चिल ने अपने अतुलनीय शब्दों में व्यक्त किया :

''लोकतंत्र के प्रति व्यक्त की गई सभी प्रकार की श्रद्धांजलिओं में आम आदमी सबसे निम्नस्तर पर होता है, जो एक छोटे से बूथ की ओर जाता है, और वह एक छोटी पेंसिल से एक छोटे से कागज के टुकड़े पर छोटा सा क्रॉस का चिन्ह बनाता है – जिसमें किसी भी स्तर की बयानबाजी अथवा स्वैच्छिक चर्चा इस विषय के अत्यधिक महत्व को संभवत: कम नहीं कर सकती है।''

यदि हम जोड़ सकते हैं, तो स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों के दौरान छोटे, बड़े भारतीयों को भीड़ की ताकत अथवा अल्प, संक्षिप्त प्राधिकरण द्वारा तैयार किए गए व्यक्तियों के विवेक की सूक्ष्म विकृति जैसे तरीकों से अपहृत नहीं किया जाएगा। इस संदर्भ में, आप कितने भी ऊंचे बनो, कानून आपसे ऊपर रहता है'

मोहिंदर सिंह गिल और अनर बनाम मुख्य चुनाव आयुक्त 1978 एससीआर (3) 272 में उच्चतम् न्यायालय के एक अत्यंत महत्वपूर्ण निर्णय में, न्यायालय द्वारा यह कहा गया कि ''चुनाव संबंधी दर्शनशास्त्र और पोन्नुस्वामी लोकतंत्र संबंधी सिद्धांत ही लोगों की सरकार है। यह एक सतत् भागीदारी का परिचालन है, न कि एक प्रलयकारी, आवधिक कार्यवाही। आम आदमी, अपनी भीड़ में, मतदान के दौरान अपने वोट को चिह्नित करते हुए अपनी संसद और अपने प्रतिनिधि की राजनीतिक पसंद के लिए सामाजिक जांच करता है। तथापि, सहभागी सरकार का परिपक्व पुष्प यदाकदा ही खिलता है, लोकप्रिय सरकार की न्यूनतम साख संबंधी विश्वसनीयता के नवीकरण के लिए प्रत्येक अवधि के पश्चात लोगों से अपील की जाती है। इसलिए, हमारे पास संवैधानिक बाध्याताओं के रूप में वयस्क मताधिकार और आम चुनाव होते हैं। चुनाव का अधिकार संविधान का मूल सार होता है''।

अपनी वास्तविक भावना और स्थिरता के रूप में, मतदान का अधिकार मात्र संवैधानिक अधिकार का प्रयोग नहीं होता है; वरन् यह सबसे पवित्र, देशभक्ति से युक्त कर्तव्य होता है। इसलिए, वर्ष 2019 के संसदीय चुनाव की एक उल्लेखनीय विशेषता है, अर्थात यह वह वर्ष है जब 21वीं सदी के युवा पहली बार अपने मतदान के अधिकार का प्रयोग करने जा रहे हैं। यह भी प्रासंगिक सिद्ध हो सकता है कि भारतीय, चुनाव के लिए तैयार हैं। तथापि, इसे व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझा जाना चाहिए कि मतदान एक ऐसा विशेषाधिकार है, जो दक्षिण एशिया और अधिकांश विश्व में कहीं प्राप्त नहीं है। इसके अलावा, भारत में चुनावों द्वारा प्रभावी परिवर्तन के प्रकार और संख्या संभवत: एक विकासशील देश के लिए अद्वितीय है। उपर्युक्त वर्णित कारणों और महत्व के लिए, आइए हम सब मिलकर लोकतंत्र के त्योहार और विकास के रोगों से मुक्ति पाने का संकल्प लें और इस चुनाव को सर्वाधिक संख्या में सर्वश्रेष्ठ बनाने का साधन बनाएं। आइए हम ईमानदार भारत, विकसित भारत, सुरक्षित भारत, अवसरवादी भारत, स्वस्थ भारत, साक्षर भारत आदि के लिए निर्णायक रूप से वोट दें, जो हमारे राष्ट्र की सबसे बुनियादी जरूरत का सम्मान है।

संवैधानिक संरक्षण प्राप्त चुनाव संस्थान को लोगों की पसंद की सर्वश्रेष्ठ सरकार प्रदान करने दें।

छोड़ के अपने सारे काम।
पहले चलो करें मतदान।।

हिंदी भाषा की स्थिति और देश के विकास में इसका योगदान

✍ ऋतुराज बोरा,
कनिष्ठ सहायक – II, सामग्री विभाग
दुलियाजान

हिंदी भाषा पूरे विश्व में सबसे ज्यादा बोलने में चौथे नंबर पर आती है लेकिन उसे अच्छी तरह से समझना, पढ़ना तथा लिखना यह बहुत कम संख्या में लोग जानते हैं। सन 1918 को हिंदी साहित्य सम्मेलन में भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने को कहा था और हिंदी के विकास और बुनियादी ढांचे को पूरे देश में प्रयोग में लाने को कहा था। आज के समय में हिंदी भाषा के ऊपर अंग्रेजी भाषा के शब्दों का असर ज्यादा पड़ा है। आज के समय में अंग्रेजी भाषा ने अपनी जड़ें ज्यादा मजबूती से जमा ली है जिससे हिंदी भाषा के भविष्य में खो जाने की चिंताएं बढ़ गई है।

जो लोग इस हिंदी भाषा में ज्ञान रखते हैं उन्हें हिंदी के प्रति अपनी जिम्मेदारी का बोध करवाने के लिए 14 सितंबर के दिन को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है जिससे वह सभी अपने कर्तव्यों का सही पालन करके हिंदी भाषा के गिरते हुए स्तर को बचा सकें। लेकिन समाज और सरकार इसके प्रति उदासीन दिखती है। हिंदी भाषा को आज भी संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा भी नहीं बनाया जा सका है।

किसी भी राष्ट्र की पहचान उसकी भाषा और उसकी संस्कृति से होती है और पूरे विश्व में हर देश की एक अपनी भाषा और अपनी एक संस्कृति है, जिसके छांव में उस देश के लोग पलते एवं बढ़ते हैं। यदि कोई देश अपनी मूल भाषा को छोड़कर दूसरे देश की भाषा पर आश्रित होता है, उसे सांस्कृतिक रूप से गुलाम माना जाता है। क्योंकि, जिस भाषा को लोग अपने पैदा होने से लेकर अपने जीवन भर बोलते हैं, लेकिन आधिकारिक रूप से दूसरे भाषा पर निर्भर रहना पड़ा, तो कहीं न कहीं उस देश के विकास में उस देश की अपनाई गई भाषा ही सबसे बड़ी बाधक बनती है। क्योंकि हम कल्पना कर सकते हैं जिस भाषा को आप बचपन से बोलते हैं उसी भाषा में अपने सारे कार्य करने पड़े तो आपको आगे बढ़ने में ज्यादा परेशानी नहीं होगी। लेकिन, यदि हम जो बोलते हैं उसे छोड़कर दूसरी भाषा में कार्य करना पड़े तो कहीं ना कहीं यही दूसरी भाषा हमारे विकास में बाधक बनती है।

यानी हमें दूसरों की भाषा सीखने का मौका मिले तो यह अच्छी बात है। लेकिन, दूसरों की भाषा के चलते अपनी मातृभाषा को छोड़ना पड़े तो कहीं ना कहीं दिक्कत का सामना जरूर करना पड़ता है। हमारे देश की मूल भाषा हिंदी है। लेकिन, भारत में अंग्रेजों की गुलामी के बाद हमारे देश की भाषा पर भी अंग्रेजी भाषा का आधिपत्य हो गया। भारत देश तो आजाद हो गया लेकिन हिंदी भाषा पर अंग्रेजी भाषा का आधिपत्य आज भी कायम है। अक्सर अपने देश के लोग के मुंह से यह कहते हुए सुना जाता है कि हमारी हिंदी थोड़ी कमजोर है। ऐसा कहने का तात्पर्य यही होता है कि–उनकी अंग्रेजी भाषा हिंदी के मुकाबले काफी अच्छी है और यदि भूल से यह कह दे कि हमारी अंग्रेजी कमजोर है तो लोग उसे कम पढ़ा–लिखा मान लेते हैं। क्या यह सही है किसी भाषा पर अगर अच्छी पकड़ ना हो तो क्या इसे अनपढ़ मान लिया जाए शायद ऐसा होना हमारे देश की विडंबना है।

हिंदी भाषा का इतना अधिक महत्व है कि बिना हिंदी को इंटरनेट से जुड़े लोगों को इंटरनेट से नहीं जोड़ सकते हैं और जब कोई भी काम अपने भाषा में हो तो यह लोगों को जल्दी समझ में आती है। इसी कारण अब इंटरनेट की दुनिया में हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषा के रूप में अपना लिया है जिससे हर भारतीय अब आसानी से इंटरनेट से जुड़ सकता है।

सही अर्थों में कहा जाए तो अगर हम अपनी मूल भाषा हिंदी का प्रचार करें तो निश्चित ही विविधता वाले भारत को अपनी हिंदी भाषा के माध्यम से एकता में जोड़ा जा सकता है।

हिंदी के महत्व को देखते हुए प्रत्येक 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है हिंदी दिवस एक ऐसा अवसर होता है, जिसके माध्यम से सभी भारतीयों को एकता के सूत्र में बांधा जा सकता है।

> "देश भर को बांधने के लिए, भारत के भिन्न-भिन्न हिस्से एक-दूसरे से संबंधित रहें, इसके लिए हिंदी की जरूरत है।"
>
> \- जवाहरलाल नेहरू
>
> दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के नये भवन का उद्घाटन, 1976
>
> हिंदी प्रचारक, मद्रास 1936

मोरान ऑयल इंडिया क्लब का चुनाव और पुनर्जीवन – मेरे कर्मजीवन का अविस्मरणीय अध्याय

प्रतीक बरुवा
अधीक्षक अभियंता
कंप्रेसर मेंटेनेंस अनुभाग
गैस प्रबंधन सेवाएं विभाग, दुलियाजान

अप्रैल 2011 में देश के एक से एक बेहतर कंपनियों में गीने जाने वाले नवरत्न ओहदे से सम्मानित ऑयल इंडिया लिमिटेड में बतौर अभियंता के रूप में शामिल होने का मौका मेरे कर्मजीवन का सबसे उल्लेखनीय संयोग था। जोरहाट इंजीनियरिंग कॉलेज से मैकेनिकल विभाग में 2007 में डिग्री हासिल करने के बाद से ही मेरा इस कंपनी में काम करने का एक सपना था, जो आखिरकार दो अलग कंपनियों में करीब चार साल काम करने के बाद अंतत: वास्तविकता में तबदील हो चुका था। एक चुनौतीपूर्ण प्रशिक्षण वर्ष की पूर्ति के उपरान्त मुझे नौकरी के स्थायीकरण के साथ-साथ प्रोडक्शन गैस विभाग के कंप्रेसर ऑपरेशन अनुभाग में नियुक्ति दी गयी थी। वहाँ मुझे बतौर इंस्टालेशन मैनेजर की हैसियत से गैस कंप्रेसर स्टेशन नंबर 2, 6 और 7 और बाद में गैस कंप्रेसर स्टेशन नंबर 8 का अतिरिक्त भार दिया गया था।

करीब दो साल तक इस दायित्व को निभाने के समय मुझे कभी पल भर के लिए भी ये एहसास न हुआ था की मेरे कर्मजीवन की सबसे कठोर परीक्षा हमारी ही कंपनी की एक और पुरानी लेकिन उत्पादन–क्षम तेल-भंडार क्षेत्र मोरान में मेरा इंतजार कर रही थी।

2014 के अप्रैल के अंत में आखिरकार मेरा तबादला मोरान प्रोडक्शन गैस विभाग में हो चुका था। अपनी गृहस्थी समेत मोरान ऑयल कॉलोनी में प्रवेश का मौका दरअसल हमारे लिए काफी सुखद था, क्यूँकि 2011 में नियुक्ति के पश्चात मोरान में तबादले तक कंपनी आवास के अभाव के कारण दुलियाजान ऑयल कॉलोनी में हमें रहने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ था।

दुलियाजान की तुलना में काफी कमसंख्यक कार्यकारी अधिकारियों के मोरान में पदस्थापित होने की वजह से कॉलोनी में भाग्यवश हमें कंपनी आवास की प्राप्ति तुरंत हो चुकी थी। मोरान ऑयल कॉलोनी का शांत समाहित परिवेश हमारे लिए आकर्षक था। कॉलोनी में खेल कूद और मनोरंजन के लिए अधिकारियों का एक क्लब है जिसे हम सब मोरान ऑयल क्लब के नाम से जानते है। वहीं दूसरी ओर कर्मचारियों के लिए मोरान ऑयल इंडिया क्लब के नाम से एक संघ की व्यवस्था भी है।

संख्या में कम अधिकारियों के होने की वजह से मोरान में हर एक अधिकारी का कर्मक्षेत्र व्यापक नजर आ रहा था और एक दूसरे की सहायता इसमें अनिवार्य लग रहा था। जैसे-जैसे मोरान में समय बीतता जा रहा था, मोरान क्षेत्र में काम करने की तहजीब से मैं वाकिफ होता जा रहा था।

किसी भी विभाग में कोई भी कठिन परिस्थिति होने से, उस बात का मोरान-प्रमुख की अध्यक्षता में हर गुरुवार को होने वाले साप्ताहिक बैठक में सविस्तार चर्चा किया जाता था और उसका समाधान निकाला जाता था। इसका ये फायदा मिलता था कि अगर किसी भी समस्या को सुलझाने के लिए चार या पांच विभागों की भी आवश्यकता पड़ती थी, तब भी उसके लिए अलग से मिलने की जरूरत नहीं होती थी और मोरान प्रमुख की उपस्थिति के कारण समाधान प्राणाली के लिए आवश्यक अनुमति और सुझाव भी वहीं मिल जाता था। सुचारू रूप से मोरान का कार्य आगे बढ़ाने का ये नियम मुझे बहुत अच्छा लगा और व्यक्तिगत रूप में मुझे भी अपने दायित्वों को निभाने में ये प्रावधान बहुत ही कारगर साबित हुआ। हालांकि किसी दुर्घटना या अप्रत्याशित घटना के समय उस साप्ताहिक बैठक का इंतजार नहीं किया जाता था और प्रासंगिक विभागों के अधिकारी हर समय एक दूसरे की सहायता के लिए प्रस्तुत रहते थे। चाहे मोरान पावर स्टेशन में गैस के आयतन की कमी हो या प्रोडक्शन ऑयल के अधिकार क्षेत्र में किसी भी तेल के कुओं में गैस के चाप की कमी हो, मोरान प्रोडक्शन गैस की तरफ से हम हमेशा हर मसले को जल्द से जल्द सुलझाने के लिए सतर्क रहते थे। उसी तरह, किसी भी वक्त किसी भी गैस पाइपलाइन में अगर गैस का अवांछित निर्गमन होता था, तो सिविल इंजीनियरिंग विभाग, अग्नि शमन विभाग के कार्यकर्ता प्रोडक्शन गैस के कर्मियों को हर संभव मदद करते थे ताकि किसी भी विपदा के होने से पहले ही उस निर्गमन को रोका जा सके।

ऐसी सतर्कता और विभागों का अंत:संबंधन इसलिए प्रशंसनीय था क्योंकि इन्हीं वजहों से दुलियाजान क्षेत्र के कंपनी मुख्यालय से सहायता की आवश्यकता काफी कम होती थी और ये मोरान क्षेत्र की स्वावलम्बिता को भी दर्शाता था। लेकिन मेरे मोरान कार्यकाल के दौरान ही 2015 में मोरान के सामने एक ऐसी चुनौती उठ खड़ी

हुई जिसमें मोरान के हर विभाग का सहयोग एकदम अनिवार्य था और इसका सामना करने के लिए दुलियाजान क्षेत्र की प्रत्यक्ष सहायता भी मुमकिन नहीं थी।

विडम्बना ये थी की इस चुनौती का कार्य क्षेत्र से भी प्रत्यक्ष रूप में सम्बन्ध नहीं था लेकिन उसका हल ढूंढ़ना मोरान के हर कर्मचारी के मनोबल को बनाये रखने के लिए जरूरी था। मनोबल का टूटना अंततः कार्य की गुणवत्ता और सुरक्षा, दोनों को ही प्रभावित कर सकती थी। इसलिए इस मसले का हल ढूंढ़ना अनिवार्य हो गया था।

ये विषय था मोरान ऑयल के कर्मचारी क्लब मोरान ऑयल इंडिया क्लब का और उस क्लब को पुनर्जीवित करने का। कईं सालों से क्लब की गतिविधियों में धीमापन नजर आ रहा था और कार्यकारी अधिकारी और कर्मचारी दोनों वर्ग के लोग क्लब को फिर से जागृत करने के पक्ष में भी थे। परन्तु किसी न किसी कारणवश क्रियाशीलता का अभाव दिख रहा था और कर्मचारीगण उस क्लब के सदस्य होने के बावजूद क्लब में सक्रिय नहीं दिख रहे थे। ऐसी परिस्थिति में क्लब को फिर से फुर्तीला बनाना बहुत जरूरी हो चुका था ताकि कर्मचारीगण कर्मविराम के समय का सही उपयोग कर पाएं और साथ ही साथ क्लब मनोरंजन का साधन भी बन जाए। मोरान जैसी दूरवर्ती क्षेत्र में कॉलोनी में ही मनोरंजन और खेल कूद के साधन होना बहुत आवश्यक है, वरना नीरसता, जिसे अंग्रेजी में मोनोटोनी कहा जाता है, कर्म को असहज बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ती।

अगर सच बोला जाए तो हमें नहीं पता की हमने इस चुनौती का कैसे सामना किया, लेकिन हमने ये कर दिखाया और सफलतापूर्वक इस चुनौती को उसके समाधान की तरफ ले जाने में समर्थ हुए।

16 अक्टूबर 2015 वो दिन था जब माननीय मोरान प्रमुख श्री अपूर्व कुमार शर्मा साहब ने हमें ऑयल इंडिया क्लब मोरान के नए पदाधिकारियों के चयन हेतु एक शांतिपूर्ण और निष्पक्ष निर्वाचन चुनाव करने का दायित्व सौपा था। यह निर्वाचन, क्लब को पुनर्जीवित करने का पहला और सबसे अहम कदम माना जा रहा था। ऊपर उल्लेखित 'हमें' में शामिल था मैं यानी इस लेख का लेखक, मोरान रसायन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी श्री दीपक ज्योति कलिता साहब, मोरान सिविल इंजीनियरिंग विभाग के वरिष्ठ अभियंता श्री विकाश सोनोवाल दादा, मोरान अग्नि शमन अधिकारी श्री दीपक गुप्ता और मोरान फील्ड इंजीनियरिंग विभाग के अभियंता श्री कंकण चौधुरी। अभी 2019 में ये सभी अधिकारी दुलियाजान में कार्य निर्वाह कर रहे हैं। माननीय शर्मा साहब पूर्वी परिसंपत्ति (ईस्टर्न एसेट) के परिसंपत्ति प्रबंधक(एसेट मैनेजर) के रूप में सेवा निवृत हो चुके हैं।

यह निर्वाचन कई मायनों में अभूतपूर्व था। अभूतपूर्व इसलिए क्योंकि शायद पहली बार हमारी कंपनी में कार्यकारी अधिकारियों के एक दल को कर्मचारियों के एक क्लब का निर्वाचन संपन्न करने का दायित्व सौंपा गया था। यह निर्वाचन इस क्लब के पुनर्जीवन का शिलान्यास रखने जा रहा था। इसकी कामयाबी पर मोरान क्षेत्र का माहौल और कर्मचारियों के मनस्थिति का भविष्य निर्भर कर रहा था। दीपक, कंकण और मुझे निर्वाचन आयुक्त के रूप में निर्वाचन को प्रारंभ से अंत तक सुचारू रूप से संपन्न कराने की जिम्मेदारी दी गयी थी जिसमें विकास दादा और कलिता साहब एक कार्यकारिणी समिति से हमें परामर्श और दिशा निर्देश दे रहे थे।

इस पूरे आयोजन के प्रारंभ में ही माननीय मोरान प्रमुख ने हमें अपनी-अपनी जिम्मेदारियों के बारे में समझाया था और हर वक्त अपने सुझावों से हमें सही दिशा में प्रेरित कर रहे थे।

निष्पक्षता और न्यायिकता को सुनिश्चित करने के लिए मोरान प्रमुख ने कुछ चुनिंदा कर्मचारियों को भी कार्यकारिणी समिति में शामिल किया था। उसके उपरान्त इस निर्वाचन से जुड़ा कोई भी बड़ा फैसला कर्मचारियों से बैठक करके सर्व-सम्मति से लिया जाता था और हर बैठक का लिखित कार्य विवरण प्रस्तुत किया जाता था ताकि बाद में कोई भी दुविधा या संदेह किसी के मन में ना रह जाए। पूरे निर्वाचन की विधि, व्यवस्थापन और नियंत्रण के नियम उन्ही बैठकों में तय किये गए थे। इसके अलावा एक और अभूतपूर्व फैसले से मोरान के हर कार्यकारी अधिकारी को कर्मचारी क्लब का सम्मानीय सदस्य पद भी दिया गया था। ये निर्णय सच में उत्कृष्ट था क्योंकि इस से क्लब का महत्व भी बढ़ गया था और कार्यकारी अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच में जो थोड़ी बहुत दूरी रहती थी उसे भी मिटाने में ये सक्षम रही।

निर्वाचन से संबंधित सारे कार्य सुव्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ रहे थे। निर्वाचन नामांकन प्रपत्र के वितरण से लेकर लौटाए गए परिपूर्ण प्रपत्रों की समीक्षा और विभिन्न पद जैसे साधारण सम्पादक, खेल सम्पादक, सांस्कृतिक सम्पादक आदि पदों के लिए प्रतिद्वंद्विता में उतरे उम्मीदवारों की अंतिम सूची की घोषणा और बैलट पत्रों की छपाई तक हर गतिविधि पूर्व निर्धारित योजना के तहत किया जा रहा था। इन सभी कार्यों का सिर्फ एक ही मकसद था की 13 नवंबर 2015 को ऑयल इंडिया क्लब-मोरान का निर्वाचन सुचारु रूप से पूर्ण किया जा सके। इन सभी कार्यों में हमें कार्याकरिणी समिति के कलिता साहब और विकाश दादा से काफी सहायता मिली जिसके लिए हम हमेशा उनके आभारी रहेंगे। ये 'टीम वर्क' और सुसंपर्कता का एक बेहतर उदाहरण है जो दर्शाता है की अगर हम इस कंपनी में सभी के सहयोग से आगे बढ़ें तो किसी भी चुनौती का मुकाबला किया जा सकता है। और सफलता की तरफ हम आगे बढ़ सकते हैं।

निर्वाचन आयुक्तों के रूप में हमने कार्यकारिणी समिति के सहयोग से मोरान के एक विश्वस्त कर्मचारी दल को निर्वाचन अधिकारी (प्रिसाइडिंग और पोलिंग अफसर) के तौर पर निर्वाचन के मतदान प्रक्रिया को संपन्न कराने का भार सौंपा था। प्रधान मतदान कक्ष की स्थापना ऑयल इंडिया क्लब मोरान में ही की गयी थी। इसके अतिरिक्त, दूरवर्त्ती खनन इलाकों में कार्यरत कर्मचारी और उत्पादन ऑयल से जुड़ें हुए दूरवर्ती प्रतिस्थापनों के कर्मचारियों की सुविधा के लिए दो अलग-अलग गतिशील पोलिंग दलों का भी चयन किया गया था जिसमें निर्वाचन अधिकारी अपने साथ बैलट बॉक्स लेकर सुरक्षा कर्मी के साथ उन दूर के इलाकों से मतदान कराके क्लब में उसी दिन शाम को मतदान की गिनती से पहले वापिस आने के लिए नियोजित थे। किसी भी निर्वाचन में हर वोट का महत्व रहता है और निर्वाचन के उसी दिव्य-वाणी का सम्मान रखते हुए हम लोगों ने हर कर्मचारी को अपने-अपने मतदान के अधिकार को पूरा करने का हर संभव अवसर प्रदान किया।

इस पूरी प्रक्रिया में हमें इस बात से बहुत संतुष्टि मिली की एक-एक पद के लिए काफी सारे उम्मीदवारों ने अपना नामांकन भरा और निर्वाचन में खड़े हुए। इस बात से ये स्पष्ट हो गया था की कर्मचारीगण क्लब के उत्कर्ष के लिए उत्सुक थे और उसके लिए अपने आप को उत्सर्गित करने के लिए भी प्रस्तुत थे। सभी उम्मीदवारों ने निर्वाचन के बताये गए नियमों का कायदे से पालन किया। मतदान के हफ्ते भर पहले से सभी उम्मीदवारों ने चुनाव प्रचार तेज कर दिया था और उनके प्रचार के अभिनव तरीके देखने लायक थे। ये बात भी उल्लेखनीय है कि इस निर्वाचन से जुड़े हर व्यक्ति ने निर्वाचन से सम्बंधित हर कार्य को कुशलतापूर्वक निभाने के साथ-साथ अपने-अपने विभाग और कंपनी के कार्यों को भी बखूबी अंजाम दिया। हमारी कंपनी में कर्मरत व्यक्ति समूह के बहू कार्य (मल्टी टास्किंग) गुण को सिद्ध करने के लिए इस निर्वाचन का उदाहरण ही काफी है। पूरे चुनाव प्रक्रिया के दौरान कर्म क्षेत्र में किसी भी कार्य की प्रगति में कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ा।

आखिरकार मोरान ऑयल इंडिया क्लब के 'भविष्य - निर्णायक' चुनाव के मतदान का वह अति विशिष्ट दिन आ पहुँचा था। और वह क्या दिन था। उस दिन की सफलता का एहसास आज भी मेरे रोंगटे खड़े कर देता है। हमें पता था की इतनी मेहनत के बावजूद क्लब के सदस्य होते हुए भी मोरान के कर्मचारीगण अगर इस चुनाव के मतदान में बढ़-चढ़ कर हिस्सा नहीं लेते हैं, तो हमारी मेहनत का कोई फल नहीं निकलेगा। लेकिन हमारी सभी आशंकाओं को नकार करते हुए क्लब में पंजीकृत 450 सदस्यों में से करीब 80 प्रतिशत मतदान को एक बहुत बड़ी कामयाबी के रूप में स्वीकार किया जाता है। मोरान ऑयल इंडिया क्लब के प्रधान मतदान कक्ष में सुबह आठ बजे से ही लगी हुई लम्बी कतार ने हमारे प्रयास और परिश्रम को अनुमोदन देके हमें एक बहुत बड़े सम्मान से सम्मानित किया था। सदस्यों का ये जबरदस्त सहयोग उनके अपने क्लब के लिए दरअसल प्यार और आदर था जो उस दिन मतदान के रूप में उभर कर सामने आया, जिसे देख हमारी आँखें नम हो गयी। दूरवर्ती क्षेत्रों में कर्तव्यरत कर्मचारियों ने भी अपने कार्यक्षेत्र में ही मतदान करके क्लब के पुनरोद्धार के इस प्रक्रिया का पूर्ण समर्थन किया। कर्मचारियों के साथ-साथ मोरान के हर कार्यकारी अधिकारी ने भी क्लब के सम्मानित सदस्य के रूप में मतदान करके हमारी हौसला अफजाई की।

आखिरकार घड़ी की सुई के संध्याकाल में चार स्पर्श करते ही मतदान समाप्त किया गया लेकिन उस वक्त तक हमारा उद्देश्य सफल हो चुका था। हमें मोरान ऑयल इंडिया क्लब को नया जीवन देना था और उसका एक शानदार शिलान्यास क्लब के सदस्य कर्मचारियों के द्वारा ही इस निर्वाचन के जरिये किया गया। चुनाव में कौन उम्मीदवार था, कौन हारा या जीत का सेहरा किसके सिर बंधा, वो हमारे लिए मायने नहीं रखता था। मायने रखता था तो सिर्फ सदस्यों की सक्रिय सहयोगिता जो हमें अंततः प्राप्त हो चुकी थी। चुनाव की पूरी प्रक्रिया शांतिपूर्ण तरीके से किसी भी विवाद के बिना संपन्न की गयी। जो उम्मीदवार जीत नहीं पाए उन्होंने विजयी पक्ष को हमारे सबके सामने बधाई दी और क्लब को एक साथ आगे ले जाने में सहायता का आश्वासन दिया। व्यक्तिगत रूप में मुझे इस बात से बहुत संतुष्टि मिली कि कर्मचारीगण ने हम कार्यकारी अधिकारियों को विश्वास में लिया और हर एक सदस्य ने चुनाव के सफल समापन के लिए हम सबका आभार व्यक्त किया। व्यक्तिगत मतभेदों की उपेक्षा करते हुए सारे सदस्य क्लब के बेहतर भविष्य के लिए एक साथ एक मंच पर एक जुट खड़े हुए। उससे बड़ा उपहार हमारे प्रयत्न के लिए और क्या हो सकता था? मोरान ऑयल इंडिया क्लब जीवित हो गया था, एक हो गया था पूरा का पूरा मोरान क्षेत्र जीवित हो गया था, एक हो गया था।

ये मेरे कर्म जीवन का शायद सबसे चुनौतीपूर्ण लेकिन सबसे सकारात्मक अध्याय था जिसमें प्रारम्भ से अंत तक हर स्तर पर हमें पूर्ण सफलता मिली। इस अध्याय ने मुझे सिखाया की किसी भी परियोजना को आरम्भ करने से पहले कैसे उसकी योजना बनानी चाहिए और कैसे उसका क्रियान्वयन किया जाना चाहिए।

मोरान का ये अध्याय मेरे दिल के हमेशा करीब रहेगा और मैं जहाँ भी क्यों न रहूँ, चुनाव के अंत में क्लब के सभी सदस्यों ने एक साथ, एक आवाज में निम्नलिखित जो नारा दिया था वह मेरे कानों में हमेशा गूँजता रहेगा और मेरी रूह को हर क्षण उत्साहित करता रहेगा - ''मोरान ऑयल इंडिया क्लब जिंदाबाद !! ऑयल इंडिया लिमिटेड जिंदाबाद!!!''

प्रकृति किस ओर जा रही है

✍ **कुमारी अंजली**
पति – पंकज कुमार
अधीक्षण अभियंता (तैलाशय–ई)
पूर्वी परिसंपत्ति, दुलियाजान

आए दिन हमें सुनने को मिल रहा है हवा, पानी में प्रदूषण का स्तर बढ़ता जा रहा है। शहरों के किसी कोने में कचरे का पहाड़ बनता जा रहा है। जमीन के नीचे जलस्तर घटता जा रहा है। गरमी दिन पर दिन और साल दर साल अपने पुराने रिकॉर्ड तोड़ कर नए तापमान स्तर को छूती जा रही है। लेकिन यह सब किस वजह से और क्यों हो रहा है। यह सोचने पर हम ज्यादा जोर नहीं दे रहे हैं। इन सब खबरों को सुन कर हम अनसुना कर देते हैं, क्योंकि हमें इन सब बदलावों से कोई खास फर्क नहीं पड़ता। हमारे लिए गर्मी नहीं हैं, क्योंकि हम आधे से ज्यादा समय तो 'एसी' में रहते हैं। हवा या पानी में प्रदूषण है तो क्या हमारे पास एयर और वाटर प्यूरिफायर है। लेकिन क्या हम इस बात की कल्पना कर पाते हैं, कि जब सारे स्रोत ही खत्म हो जाएंगे, तो हम उन चीजों का लाभ कहां से ले पाएंगे।

देश दुनिया में प्रदूषण का स्तर इस कदर बढ़ चुका है, कि वह विकराल रूप ले चुका है। हवा में घुली जहर कुछ प्रमुख मेट्रो शहरों में लोगों का सांस लेना भी दूभर कर चुकी है। बढ़ती गाड़ियों की संख्या, मिल, कारखानों से निकलता काला धुंआ, और कचरों के ढेरों से निकलता खतरनाक गैस हवा को और भी ज्यादा जहरीला बना रहा है। इनके आस–पास के इलाकों में रहने वाले लोगों का जीवन और भी कठिन हो चुका है। उनका घर बीमारियों का घर बनता जा रहा है। इन सब के जिम्मेदार हम ही हैं। इंसान ने अपनी जरूरतों के हिसाब से प्रकृति के हर पहलू को भरपूर निचोड़ रहा है। वह भी पूरे अंत तक कि अब प्रकृति वापस जब हिसाब मांगती है, तो सब तहस–नहस कर देती है। इसका परिणाम हमने केदारनाथ में देखा, जो प्रकृति के बदले का सबसे बड़ा उदाहरण है।

देश फिलहाल सबसे बड़ी समस्या झेल रहा है, पानी। जिसके बारे में कोई बात नहीं कर रहा है। देश के कई बड़े राज्यों में अंडर्ग्राउंड वॉटर लेवल बहुत ही नीचे जा चुका है। उत्तर भारत के बड़े हिस्सों में, गांवों में लोगों को टैंकर के पानी का सहारा लेना पड़ रहा है। अधिकतर चापाकल सूख चुके हैं। नदियों को देख कर नहीं लग रहा है, कि कभी यहां नदी थी। तालाब का पानी जमीन पी गई और कुएं का पानी भी नीचे जा चुका है। पानी की कमी इसलिए है क्योंकि बारिश नहीं हो रही है। मॉनसून तो आ गया है, लेकिन बादल नहीं आए। आयेंगे भी कहां से जिन इलाकों में पेड़–पौधों की कमी है, वह क्षेत्र बिन बारिश के बेहाल हैं। पहली गरमी से और दूसरी पानी की कमी से। खेतों में फसलें बिन पानी के बर्बाद हो रही हैं। सोचिए, एक समय ऐसा आएगा कि ना तो हमारे पास पानी होगा और ना भोजन, तब। हमारे देश में जनसंख्या इतनी है कि अगर पानी की कमी में बढ़ोतरी हुई तो सरकार भी इस कमी को पूरा नहीं कर पाएगी। क्योंकि सिर्फ और सिर्फ बारिश की जरूरत है, तो जल स्रोतों को पानी से तर सके। देश में हजारों–हजार किलोमीटर के क्षेत्र के जंगल को काटा गया है, जिसका परिणाम है कि दिन प्रतिदिन गरमी भीषण होती जा रही है। वहीं बरसात नहीं होने के कारण जगह–जगह पानी की कमी बढ़ती जा रही है। इस समस्या से उबरने के लिए हम और आप बस यही कर सकते हैं, कि अपने आस–पास पेड़ लगाएं। जितना हो सकता है हरा भरा रखें। साफ–सफाई और स्वच्छता का ध्यान रखें।

हिन्दी से है हिन्दुस्तान
आओ करें इसका सम्मान।

- श्रीमती अदिति कुमारी
पति - श्री नीतेश कुमार
भू-भौतिकी विभाग, दुलियाजान

नंदा-देवी राज जात: दुनिया की सबसे लम्बी पद-यात्रा

(माता पिता और रिश्तेदारों से सुनी हुई लोक-गाथाओं पे आधारित।)

रितेश मोहन जोशी
उप महाप्रबंधक(भूभौतिकी)
भूभौतिकी विभाग,दुलियाजान

बारह अंक बहुत महत्वपूर्ण अंक है, साल में 12 महीने होते हैं, एक दिन में 12-12 घंटे के दो चरण होते हैं, राशियों की संख्या (मेष से मीन तक) भी 12 होती है, कुम्भ का मेला 12 साल में आता है, इसी प्रकार दुनिया की सबसे लम्बी पद-यात्रा भी 12 सालों में एक बार आती है।

भारतवर्ष के उत्तराखंड प्रदेश में आयोजित की जाने वाली ये पद-यात्रा नंदा-देवी राज-जात यात्रा के नाम से प्रसिद्ध है। 280 किलोमीटर लम्बी यह यात्रा हिंदू कैलेंडर में भाद्रपद महीने (अगस्त-सितंबर) में आयोजित होती है और 3 सप्ताह तक चलती है। हिमालय क्षेत्र के अराध्या देवी माँ नंदा-देवी को उनके घर (ससुराल) भेजने की यह यात्रा चमोली जिले के नौटी गांव में एक चार सींगों वाले भेड़ (मेड़ा) जिसे चौसिंग-खाडू भी कहा जाता है, के नेतृत्व में शुरू होती है और नंदा-देवी जैव क्षेत्र (बायोस्फियर) में स्थित हेमकुंड में समाप्त होती है जहां एक यज्ञ के पश्चात चौसिंगे भेड़ को मुक्त किया जाता है।

उच्च हिमालय में हर बारह साल में नंदा देवी की एक सुनहरी मूर्ति चांदी की पालकी में हेमकुंड नामक एक भव्य हिम-झील में ले जाई जाती है। यह यात्रा घने जंगलों, ऊंचाई वाले मैदानी इलाकों(बुग्याल), बर्फ से भरी दरारों और बर्फीली नदियों से होकर जाने वाली एक दुर्गम यात्रा है जो हजारों भक्तों द्वारा नंगे पैर की जाती है। नंदा-देवी राज जात यात्रा उन किंवदंतियों के लिए एक श्रद्धांजलि है जो एक हजार साल से भी अधिक पुरानी हैं।

नंदा-देवी पर्वत

भारत का दूसरा सबसे ऊँचा पर्वत शिखर गढ़वाल हिमालय का हिस्सा है,और उत्तराखंड के चमोली जिले में, पश्चिम में ऋषिगंगा और पूर्व में गोरीगंगा घाटी के बीच स्थित है। नंदा-देवी शिखर, जिसके नाम का मतलब होता है आनंद प्रदान करने वाली देवी, को उत्तराखंड हिमालय का संरक्षक-देवता (इष्ट देव) माना जाता है। शिखर के साथ-साथ इसके आसपास के ऊंचे पहाड़ों के घेरे अर्थात नंदा-देवी अभयारण्य को इसके धार्मिक महत्व को स्वीकार करते हुए और इसके नाजुक पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण का संज्ञान लेते हुए सन् 1988 में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर स्थल घोषित किया।

नंदा-देवी पर्वत में दो शिखर हैं; पश्चिमी शिखर उच्च है और नंदा के नाम से जाना जाता है और पूर्वी शिखर निम्न है और बहन सुनंदा के नाम से जाना जाता है।

लेखक द्वारा रामगढ, जिला नैनीताल कुमाऊं से खींचा गया नंदा-सुनंदा पर्वत का विहंगम दृश्य

कौन है माँ नंदा-देवी (नंदा-सुनंदा) ?

नंदा देवी की उत्पत्ति बहुत स्पष्ट नहीं है। कुछ प्रारंभिक उल्लेख संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों जैसे श्रीमद भगवतम में पाए जाते हैं और सदियों से कुमायूं, एवम गढ़वाल में जुड़वाँ देवी के रूप में पूजे जाते हैं।

एक किंवदंती के अनुसार चमोली के चंद वंश के राजा की एक सुंदर, युवा राजकुमारी, नंदा अपने जीवन को बचाने के लिए भाग रही थी। एक धूर्त रोहिला राजकुमार उसके प्यार में पागल था और

इस कारणवश राजकुमारी, नंदा का पीछा कर रहा था। नंदा के पिता ने नंदा का राजकुमार से शादी करने से इनकार कर दिया था। इस कारणवश उसने इस कुमाऊं राजा के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया और उसे हरा दिया।

अपने आप को बचाने के लिए, नंदा-देवी बर्फीले शिखर पर चढ़ गई और बर्फ से आच्छादित पवित्र पर्वत के साथ विलीन हो गई। 25643 फीट ऊँचा यह पर्वत नंदा के लिए एक मंदिर के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था और नंदा-देवी, संरक्षक देवी के रूप में प्रतिष्ठित हुई। यह पर्वत बाद में नंदा-देवी पर्वत के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

कुछ इतिहासकारों के अनुसार, चंद वंश (दसवीं से अठारहवीं सदी) से भी पहले कत्यूरी राजाओं (सात से इग्यारहवीं सदी) ने नंदा-देवी को अपना संरक्षक देवी बनाया और उन्हें पूजा करने के लिए अपनाया। उन्होंने उसे नंदा नाम से पुकारा। नंदा को हिमालय पर्वत की पुत्री माना जाता है। क्योंकि वो पार्वती की बेटी है अत: उन्हें पार्वती का रूप(पार्वती का पुनर्जन्म) शिव की अर्धांगिनी माना जाता है। देश का दूसरा सबसे बड़ा पर्वत शिखर(नंदा-सुनंदा) इन दो देवियों का प्रतिनिधित्व करती हैं तथा कुमाऊं में लगभग हर जगह से दिखाई देता है। कुमाऊं में, नंदादेवी के मंदिर नैनीताल, अल्मोड़ा, रानीखेत, रानीकटोरा, मल्ला दानपुर और गढ़वाल में कई स्थानों पर स्थित हैं।

एक अन्य किंवदंती के अनुसार एक बार जंगल में चलते समय एक बैल ने नंदा और सुनंदा (जुड़वाँ बहनों) का पीछा किया। वे केले के पेड़ और कुछ झाड़ियों के पीछे छिप गई। एक बकरी वहाँ आई और केले के पत्तों को खा गई और नंदा और सुनंदा बैल को दिख गयी गईं, जिसने दोनों बहनों को मार डाला। यही कारण है कि हाल के दिनों तक नंदा-देवी वार्षिकोत्सव के दौरान एक बकरी और बैल की बलि दी जाती थी। हालांकि बीते सालों में यह प्रथा समाप्त सी हो गयी है।

परंपरा की उत्पत्ति

प्रचलित लोक मान्यता है कि हिमवंत और मैणा की सात पुत्रियों में सबसे छोटी नंदा का विवाह कैलासवासी शिव से किया गया था। गढ़वाल की पट्टी चांदपुर और श्री गुरूजी क्षेत्र को माँ नंदा-देवी के माता-पिता का घर माना जाता है और कैलाश पर्वत को शिव का घर(माँ नंदा-देवी का ससुराल) माना जाता है। बारह वर्ष तक जब पिता हिमवंत ने नंदा की कोई सुध नहीं ली तो उसने माता-पिता को पुकारा। इस दौरान उसके कुछ अश्रु धरती पर गिर पड़े, जिससे पिता के देश में उथल-पुथल मच गई। वह चिंतित होकर महर्षि नारद के पास पहुंचे। नारद ने उन्हें सलाह दी कि शरद ऋतु में सौगात लेकर नंदा को मनाने जाएं। नंदा अपने मैत(माईके) आयी और फिर उन्हें विधिवत उनके सौरास (ससुराल) भेजा गया। इन्हीं स्मृतियों को जीवित रखने के लिए तब से नंदा-देवी राज जात (तीर्थ-यात्रा) का आयोजन किया जाता है।

बर्फीली परिस्थितियों में नंगे पैर की जाने वाली दुनिया की सबसे लंबी पैदल-यात्रा:

इस यात्रा को यूं ही हिमालय का महा-कुम्भ नहीं कहा जाता। यह एक ऐसी यात्रा या यूं कहें कि उत्सव है जिसमें कुमाऊं और गढ़वाल ही नहीं बल्कि दुनिया भर के लोग बढ़-चढ़ के हिस्सा लेते हैं।

यह राज जात यात्रा भारतीय राज्य उत्तराखंड के कर्णप्रयाग तहसील के 20 किमी दूर नौटी गांव से निकलती है। कंसुआ गांव के कुंवर प्रथागत तरीके से इसका उद्घाटन करते हैं। जब यात्रा शुरू होती है तो भारी बारिश होती हैं मानो देवी अपना मायका छोड़ के ससुराल जाते वक्त रो रही हो। इस यात्रा में कई गांव आते हैं और ऐसे ही एक भगवती नामक गांव में देवी अपनी बहन सुनंदा से मिलती हैं।

यह यात्रा बहुत कठिन है क्योंकि जिन रास्तों से यह यात्रा गुजरती है वह बहुत दुर्गम एवम बर्फीले है, बावजूद इसके भक्तों द्वारा यह तीर्थयात्रा नंगे पैर की जाती है। इस यात्रा में कुल बीस पड़ाव आते हैं, जिनमें से अंतिम पांच पड़ाव उच्च हिमालयी क्षेत्र में निर्जन (बिना किसी आबादी) के हैं। यह यात्रा हिमनदी से बने तालाब रूपकुंड से गुजरती हुई हेमकुंड में समाप्त होती है।

तो क्यों तीर्थयात्री 3 हफ्तों तक चलने वाली इस यात्रा में इतनी कठिनाईयों का सामना इतनी हंसी-खुशी के साथ करते हैं? माता-पिता और परिजनों से पूछने पे निम्न कहानी उजागर हुई।

उत्तराखंड को देवभूमि के नाम से भी जाना जाता है माँ नंदा-देवी चाहती हैं कि श्रद्धालु तीर्थयात्रा को आध्यात्मिक यात्रा के रूप में मानें आमोद-प्रमोद के रूप में नहीं। नियम बहुत सख्त हैं और नियम में रहना अनिवार्य है।

दसवीं सदी में चंद वंश अपने कुमाऊं और गढ़वाल में अपने राज्य का विस्तार करने लगा। ग्यारहवीं सदी में चंद वंश के राजा जसधावल की पत्नी रानी वल्लभा को माँ नंदा-देवी ने शाप दिया था। इस कारण राज्य सूखा, अकाल और अन्य प्राकृतिक आपदाओं से जूझने लगा। शाही पुजारी ने कारण का आंकलन करने पर राजा को नंदा-देवी राज जात में भाग लेने की सलाह दी, ताकि शाप से छुटकारा मिल सके। शाही पुजारी के सुझाव पे राजा, रानी, राजकुमार जदील और राजकुमारी जदीला ने यात्रा पे जाने का निश्चय किया और अपने साथ आमोद-प्रमोद के लिए कुछ संगीतकारों और नर्तकियों को भी ले गए।

उन्होंने यात्रा के दौरान मनाए जाने वाले प्रतिबंधों का पालन नहीं किया, मानदंडों को धता बताते हुए, राजा ने नृत्य सत्र आयोजित किए। एक उच्च शिविर में रात भर बहुत गायन और नृत्य हुआ।

इससे माता क्रोधित हो गयी। उसने नर्तकियों को शाप दिया और उन्हें पत्थरों में बदल दिया। इसी तरह से इस स्थान का नाम पथार नचौनी (पत्थर की नर्तकियों) पड़ा जो आज भी 13000 फीट की ऊंचाई पर मौजूद है।

यात्रा के दौरान, भक्त रूपकुंड की रहस्यमय झील से गुजरते हैं। यहाँ पर खोपड़ी और हड्डियों के अवशेष हैं जिनकी उम्र नवीं शताब्दी दर्ज हुई है। एक अन्य किवदंती के अनुसार, यात्रा के दौरान रानी ने एक गुफा में एक बच्चे को जन्म दिया, इसने देवी को नाराज कर दिया। राजा जसधवल ने देवी की अवज्ञा की थी। माता क्रोधित थी इसलिए उनहोंने लाटू नाम के एक स्थानीय देवता की मदद से बारिश, भारी ओलावृष्टि और हिमस्खलन पैदा किया। राजा की सेना को बचने का कोई मौका नहीं मिला और सभी माता के प्रकोप से मारे गए। रूपकुंड झील पर ये कंकाल उन्हीं सैनिकों के हैं, फोरेंसिक विज्ञान द्वारा हड्डियों की उम्र नवीं सदी और राजा के राज पात का ग्यारहवीं सदी में बहुत अंतर नहीं है और किवदंतियों का कुछ-कुछ वास्तविकता से मेलजोल नजर आता है।

क्योंकि लाटू देवता ने देवी की मदद की थी इसलिए यात्रा के दौरान उनके लिए भी एक विशेष स्थान है। वान नाम का एक सुंदर गाँव जो 8000 फीट की ऊंचाई पर है वहां लाटू देवता का एक मंदिर है। आगे बढ़ने से पहले तीर्थयात्री पहले यहाँ पूजा करते हैं।

राजा जसधावल को कंसुआ के राजकुमार का पूर्वज माना जाता है और इस कारणवश कंसुआ गांव के कुंवर राजा जसधावल को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा प्रथागत तरीके से इसका उद्घाटन करते हैं।

इस यात्रा की एक और दिलचस्प विशेषता चार सींगों वाले भेड़/मेढ़ा (चौसिंग-खाडू) है। भेड़ को रंगीन दुपट्टा, मालायें, चूड़ियों आदि से सजाया जाता है। यह जुलूस के आगे-आगे चलता है मानो जुलूस का मार्गदर्शन कर रहा हो मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है। हेमकुंड पहुंचने पे चौसिंग-खाडू को छोड़ दिया जाता है। यह चौसिंग-खाडू यात्रा से कुछ महीने पहले ही चमत्कारिक रूप से जन्म लेता है। जानिये इसकी कहानी।

नर्तकियों और दरबारियों को पत्थर में बदलने के बाद माता ने राजा को दण्डित किया। दंड था राजा और उसके वंशजों को तपस्या के रूप में हर साल यात्रा करना। लेकिन हर साल यह कठिन यात्रा करना संभव नहीं था। राजा को यकीन था की माता उससे क्रोधित है उस पर तरस नहीं खायेगी तो राजा ने रानी से कहा की वह माता को गुहार लगाए। रानी ने हस्तक्षेप किया और माता से क्षमा मांगी। माता ने दंड की मात्रा कम कर दी और प्रत्येक वर्ष की जगह 12 वर्षों में यात्रा करने का आदेश दिया।

12 वर्ष बहुत लंबा समय है और भूल चूक होना संभव है। ताकि लोग यात्रा का समय भूल ना जाए इसलिए माता की शक्तियां यह सुनिश्चित करती है कि हर 12 साल में एक चार सिंह वाले भेड़ का जन्म हो और यह जन्म आज भी हर 12 साल में नौटी गाँव में होता है

लोकप्रियता

माँ नंदा-देवी पहाड़ों की बेटी और भगवान शिव की पत्नी गढ़वाल और कुमाऊं क्षेत्र के स्थानीय लोगों की सर्वोच्च आध्यात्मिक देवी है। देवी की लोकप्रियता इस बात से समझ में आती है, कि देश की दूसरी सबसे ऊंची चोटी को देवता के नाम से पहचाना जाता रहा है और गढ़वाल और कुमाऊं के सभी प्रमुख स्थानों पर माँ नंदा-देवी के मंदिर स्थित हैं।

नंदा-देवी राज जात यात्रा महज धार्मिक यात्रा नहीं है, संस्कृति का प्रतिबिंब भी है। यह एक ऐसी यात्रा है, जो उत्तराखंडी लोक से ही परिचित नहीं कराती बल्कि उसके वैशिष्ट्य को भी उजागर करती है। यह एक यात्रा है, जो देवभूमि उत्तराखंड की संस्कृति, जीवन शैली, वनस्पतियों, जीवों और इस देवभूमि के अन्य पहलुओं की गहरी जानकारी देती है। जय माँ नंदा-देवी।

जन में हिन्दी, मन में हिन्दी,
हिन्दी हो हर ग्राम में
राजभाषा का करें उपयोग,
हम अपने हर काम में।

- श्रीमती रेखा भण्डारी उपाध्याय
पति - श्री यादव उपाध्याय,
एल पी जी विभाग, दुलियाजान

भूटान की यात्रा

✍ **अनिता निहालानी**
पति - एम.सी. निहालानी
कार्यकारी निदेशक (अनुसंधान एवं विकास)
अनुसंधान एवं विकास विभाग, दुलियाजान

आज 'थिम्फू' में हमारा पहला दिन है। सुबह साढ़े छह बजे जब कोलकाता हवाई अड्डे पहुँचे, तब तक ड्रुक एयर का काउन्टर नहीं खुला था। कुछ देर बाद हलचल आरम्भ हुई और औपचारिक कार्यविधियों के बाद नौ बजे जहाज ने उड़ान भरी। एक घंटे की आरामदायक यात्रा के बाद भूटान के 'पारो' नामक स्थान पर पहुँचे, उस समय स्थानीय समय था साढ़े दस, यानि यहाँ की घड़ियाँ भारत की घड़ियों से आधा घंटा आगे हैं। हवाई अड्डा काफी खुला है और इसकी साज-सज्जा किसी बौद्ध मन्दिर जैसी है। बाहर निकलने से पूर्व ही हमने मोबाइल फोन में स्थानीय सिमकार्ड डलवा लिया था। 'मेक माय ट्रिप' की तरफ से गाइड एक बड़ी गाड़ी लेकर आया था। हम दोनों के अलावा एक बौद्ध दम्पति तथा उनकी पुत्री, जो मेडिकल की छात्रा है, भी हमारे साथ थे। एक घंटे की सड़क यात्रा के बाद हम भूटान की राजधानी 'थिम्फू' पहुंच गये। सहयात्रियों को उनके होटल में उतार कर हम 'मिगमार' नाम के होटल पहुँचे, जिसकी दीवारें पीले रंग से रंगी हैं, सुंदर चित्र व बेलबूटों से सजी हैं। बाहर फूलों का बगीचा है, और होटल काफी बड़ा है। दोपहर का भोजन हल्का व सुपाच्य था, कुछ देर विश्राम करके हम स्थानीय बाजार देखने गये। यहाँ हस्तकला के सामानों से भरी अनेकों दुकानें हैं।

आज दूसरे दिन हम 'थिम्फू' के दर्शनीय स्थलों को देखने गये, उससे पूर्व सुबह जल्दी उठकर होटल की दायीं ओर प्रात: भ्रमण के लिए निकले। यहाँ पैदल चलने वाले यात्रियों के लिए काफी चौड़े मार्ग बने हैं, जिस पर सुबह-सुबह कुछ लोग दौड़ भी रहे थे। हवा ठंडी थी, जैकेट को कान तक ढककर हम चारों ओर के सुन्दर पर्वतों को देखते हुए आगे बढ़ते रहे। साढ़े नौ बजे गाइड 'पेलडन' के साथ ड्राइवर अपनी गाड़ी लेकर आ गया। हमारा पहला पड़ाव था, राष्ट्रीय 'आर्ट एंड क्राफ्ट सेंटर'। गाइड ने बताया कक्षा दस उत्तीर्ण करने के बाद कोई भी विद्यार्थी इस संस्था में आकर चित्रकला, मूर्ति कला, कढ़ाई, काष्ठ कला आदि सीख सकता है। कुछ कोर्स तीन वर्ष के हैं तथा कुछ कोर्स छह वर्ष के लिए हैं। यहाँ से दक्षता प्राप्त करने के बाद छात्र-छात्राएं अपना निजी व्यवसाय आरम्भ कर सकते हैं। भूटान की हस्तकला विश्वप्रसिद्ध है। बौद्ध चित्रकला तथा वास्तुकला अपनी सूक्ष्म कारीगरी, सुंदर आकृतियों तथा रंगों के लिए जानी जाती है। हमने कई छात्रों को काम करते हुए देखा। इसके बाद हम बौद्ध साधिकाओं की एक संस्था देखने गये। जहाँ युवा तथा वृद्ध साधिकाएँ तथा बौद्ध साधक भी मन्त्र जाप आदि धार्मिक क्रियाकलापों में व्यस्त थे। वहाँ का वातावरण एक विचित्र उल्लास से भरा था। कुछ वृद्ध भिक्षुओं की तस्वीरें हमने उतारीं, उनके मुस्कुराते हुए चेहरे भूटान के बढ़े हुए हैप्पिनेस इंडेक्स की गवाही दे रहे थे। टेक्स्टाईल म्यूजियम तथा क्राफ्ट बाजार हमारे अगले पड़ाव थे।

भूटान में पर्यटकों का आना 1974 में आरम्भ हुआ, जब यहाँ के चौथे राजा जिग्मी सिंग्वाई वांगचुक का राज्याभिषेक हुआ था। इन्होंने ही देश को ग्रॉस नेशनल हैप्पिनेस GNH का सिद्धांत दिया। इस सिद्धांत के अनुसार देश के आर्थिक विकास की तुलना में लोगों की खुशी ज्यादा जरूरी है। भूटान की विकास की परिकल्पना के आधार पर यूएन ने 20 मार्च को 'विश्व प्रसन्नता दिवस' भी घोषित किया है। आज भूटान में वर्ष भर पर्यटक आते हैं, यहाँ का प्राकृतिक वातावरण, शुद्ध हवा और सुन्दरता सभी को आकर्षित करती है। साठ वर्ष की आयु होने पर चौंतीस वर्षों के शासन के बाद राजा ने स्वयं ही अपने पुत्र को राजगद्दी पर बैठा दिया। पांचवे राजा जिग्मी खेसर वाम्येल एक दार्शनिक, सुधारक तथा आध्यात्मिक व्यक्ति थे, जिन्होंने देश में कितने ही सुधार कार्य किये। 2008 में प्रजातंत्र की स्थापना करके जनता को देश के विकास में भागीदार ही नहीं बनाया, आत्मनिर्भर बनाया। भूटान की जनता इन्हें ईश्वर की तरह मानती है। भूटान ही विश्व में एकमात्र ऐसा देश है जहाँ लोकतंत्र के लिए कोई आन्दोलन नहीं हुआ, जनता को इसके योग्य बनाया गया और उन्हें उपहार स्वरूप इसे प्रदान किया गया।

आज थिम्फू में तीसरा दिन है, प्रात: भ्रमण, प्राणायाम और स्वादिष्ट नाश्ता करने के बाद हम दर्शनीय स्थल देखने निकले। ड्राइवर नीमा अपनी नई टोयोटा के साथ मौजूद था। निकट स्थित एक अन्य होटल से तीन सहयात्रियों को लेकर हम सबसे पहले भूटान की अति प्राचीन मोनेस्ट्री जिसे यहाँ की भाषा में द्जोंग कहते हैं, देखने गये। मठ के मुख्य कक्ष में संस्थापक की विशाल मूर्ति है।

कक्ष को रंगीन झंडियों, चित्रों, पुष्पों आदि से सजाया गया था। एक कक्ष में बुद्ध की विशाल मूर्ति भी वहाँ पर थी। आज बुद्ध का महा परिनिर्वाण दिवस होने के कारण लोगों का एक बड़ा हुजूम दर्शन करने आया था। हमने भी परिक्रमा में भाग लिया। सारा वातावरण उत्सव व प्रसन्नता से भरा था। कुछ लड़कियाँ और लड़के सभी को फलों के रस के पैकेट्स मुफ्त बांट रहे थे। इसके बाद हम आधुनिक भूटान के निर्माता तीसरे राजा के स्मरण में बने स्मारक को देखने गये। वहाँ भी हजारों भूटानी अपने-अपने परिवार सहित पूजा कर रहे थे। सभी अपनी पारंपरिक वेश भूषा में थे। पुरुषों के वस्त्र को घो तथा महिलाओं की पोषाक को यहाँ कीरा कहते हैं। कुछ बौद्ध साधक पाठ कर रहे थे। यहाँ घंटो तक लोगों की भीड़ आती रही और परिक्रमा बिना रुके चलती रही।

अगला पड़ाव था 'बुद्धा पॉइंट' जो एक विशाल पर्वत को काटकर पन्द्रह वर्ष पूर्व ही बनना आरम्भ हुआ है। हांगकांग। चीन तथा सिंगापुर की सहायता से बना यह विशाल स्थल दूर से ही नजर आता है। लोगों की विशाल भीड़ यहाँ भी थी। दोपहर के भोजन के बाद हम 'टाकिन जू' देखने गये। बकरी का सिर और बैल का धड़ मिलाकर जैसे यह अद्भुत प्राणी बना है। इसके जन्म की अनोखी कथा यहाँ प्रचलित है। होटल के निकट ही एक बुद्धा पार्क में कुछ समय बिताकर हम होटल लौट आये। कल सुबह पुनाखा के लिए रवाना होना है।

आज चौथे दिन भी सुबह हम जल्दी उठे और प्रात: भ्रमण के लिए गये। होटल से उतरकर निचली सड़क पर दायीं ओर एक इमारत थी, जिसके चारों ओर कुछ महिलाएं हाथ में माला लिए जप करती हुई परिक्रमा कर रही थीं। दीवार में समान दूरी पर झरोखे बने थे जिसमें किसी देवी या देवता का चित्र लगा था। यहाँ पर लोगों को माला हाथ में लिए सड़क पर चलते भी देखा जा सकता है। साढ़े आठ बजे 'पुनाखा' के लिए रवाना हुए। पौन घंटे बाद 'डेचुला पास' पहुंचे जो नौ हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ एक सौ आठ स्तूप बनाये गये हैं जो दो हजार तीन में शहीद हुए सैनिकों की स्मृति में हैं। उस समय भारत से आतंकवादी आकर यहाँ छिप गये थे, भारत सरकार के कहने पर भूटान की सेना ने उन्हें देश से भागने पर मजबूर कर दिया था। इसी युद्ध में कितने ही भूटानी सैनिक शहीद हो गये थे। हमारा अगला पड़ाव था फर्टिलिटी टेम्पल, जहाँ सन्तान की चाह व उनकी रक्षा की कामना के लिए लोग आते हैं। बच्चों का नामकरण संस्कार भी वहीं किया जाता है। डेढ़-दो कि. मी. चढ़ाई के बाद हम पहाड़ पर स्थित मन्दिर में पहुँचे। इसके बाद बारी थी 'पुनाखा फोर्ट' की, जहाँ काफी सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद हम किले के मुख्य द्वार पर पहुँचे। सामने ही भूटान का राष्ट्रीय ध्वज लहरा रहा था तथा एक विशाल इमारत थी जिसके मध्य में एक विशाल स्तम्भ था। इमारत में दायीं ओर के भाग में सरकारी कामकाज होता है तथा बायीं ओर धर्मगुरू तथा बौद्ध भिक्षु आदि रहते हैं। भूटान में दोनों को समान आदर दिया जाता है। भूटान के संस्थापक गुरू रिनपोचे का यहाँ बहुत सम्मान किया जाता है। गाइड से उनके बारे में कई बातें सुनीं, यहाँ का इतिहास मिथकों से भरा हुआ है। शाम चार बजे हम होटल पहुंचे। पुनाखा में हमारा होटल ज़िन्खोम एक सुंदर रिजार्ट है, यहाँ स्पा भी है ध्यान कक्ष भी। एक पहाड़ पर स्थित इस रिजॉर्ट में कमरे की बालकनी से भी किला दिखाई दे रहा था, जिसे देखकर हम आये थे। निकट ही हाथी के आकार का एक पर्वत था जिसके दोनों ओर से दो नदियाँ आकर किले के आगे कुछ दूर पर मिल जाती हैं। सूर्यास्त के समय किला व सामने बहती नदी अत्यंत मनमोहक दृश्य का सृजन कर रहे थे। शाम को एक घंटा योग अभ्यास किया। भोजन के समय बिजली चली गयी तो एक महिला कर्मचारी ने मोमबत्ती जला दी। डिनर अपने आप ही कैंडल लाइट डिनर में तब्दील हो गया। तभी वर्षा भी होने लगी और वह बात भी पूरी हो गयी कि भूटान में कभी भी वर्षा हो जाती है।

सुबह उठकर कुछ देर टहलते रहे, एक हल्के भूरे रंग के बालों वाला झबरीला कुत्ता हमारे साथ-साथ चलने लगा। योगाभ्यास के लिए ध्यान कक्ष में गये जो बिलकुल खाली पड़ा था। साढ़े नौ बजे हम 'पारो' के लिए निकल पड़े। डैचुला पास में पुन: कुछ देर रुककर दोपहर डेढ़ बजे पारो के 'ले मेरिडियन' होटल में आ गये, जहाँ श्वेत वस्त्र ओढ़ाकर हमारा पारंपरिक ढंग से स्वागत किया गया, सेब और दालचीनी का स्वादिष्ट पेय भी दिया। कमरे की खिड़की से नदी दिखाई देती है। बाहर बगीचे में एक स्तूप बना है। यहाँ फूलों की अनगिनत किस्में हैं। गुलाबों के तो क्या कहने, हर रंग के गुलाब इस होटल के सामने वाले बगीचे में लगे हैं। अभी दो रात्रियाँ हमें यहाँ बितानी हैं। भोजन परोसने वाले बैरे बहुत हंसमुख व मेहमानों का आदर करने वाले हैं। कल 'टाइगर नेस्ट' जाना है, जिसके लिए चार किमी चढ़ाई करनी है। सुबह आठ बजे निकलना होगा।

पारो में हमारा दूसरा दिन है। सुबह नदी किनारे टहलने गये। पानी ठंडा था, कुछ देर पानी में पैर रखने से ही सारे शरीर में ठंडक का अहसास होने लगा। गुलाब की झाड़ियों को निहारा और कुछ तस्वीरें लीं। बगीचे में रखी लकड़ी की एक बेंच पर बैठकर प्राणायाम किया। आठ बजे नीमा ड्राइवर टोयोटा लेकर आया गया।

धर्मा रिजार्ट से तीन अन्य सहयात्रियों को लेकर हम 'टाइगर नेस्ट' के बेस कैम्प पहुँचे, जहाँ पहले से ही पचास-साठ छोटी-बड़ी कारें मौजूद थीं। टिकट लेकर तथा पचास रूपये किराये पर छड़ी लेकर हम नौ सौ मीटर ऊँचे टाइगर नेस्ट पर जाने के लिए रवाना हुए। ऊँचे-नीचे रास्तों से होते हुए तथा रास्ते में भूटान के सुंदर दृश्यों को निहारते हुए कहीं-कहीं खड़ी चढ़ाई करके हम डेढ़ घंटे बाद एक कैफेटेरिया तक पहुँचे। कुछ लोगों ने निश्चय किया कि वे आगे नहीं जायेंगे। हम कुछ यात्रियों के साथ मंजिल पर जाने के लिए रवाना हुए। इस बार चढ़ाई पहले से कठिन थी तथा आगे जाकर अनगिनत सीढ़ियों से उतरना व चढ़ना था। मन्दिर पहुंचने से पहले कल-कल निनाद करता हुआ एक सुंदर झरना दिखाई दिया जो काफी ऊंचाई से गिर रहा था। जिस का दृश्य देखकर लोग सारी थकान भूल गये और तस्वीरें उतारने लगे। उसके बाद मुख्य इमारत नजर आई जो गुरु पद्मसम्भव का मन्दिर है। गाइड सोनम ने सभी स्थानों का दर्शन कराया तथा उनका महत्व बताया। मन्दिर का वातावरण बहुत पवित्र ऊर्जा से भरा हुआ था, सुंदर सुगंध बिखरी थी तथा कुछ पुजारी ध्यान में मग्न थे, कुछ लोगों को पवित्र जल दे रहे थे। मुक्ति की कामना करके जब मन्दिर से बाहर निकले तो मन शांति और आश्चर्यजनक ऊर्जा का अनुभव कर रहा था। कैफेटेरिया तक की वापसी की यात्रा सहज ही पूर्ण हो गयी। अभी शेष सहयात्री नहीं पहुँचे थे सो एक घंटा प्रतीक्षा करके तीन बजे हम बेस कैम्प के लिए रवाना हुए, एक घंटे में पहुंच गये। चढ़ाई जितनी कठिन थी उतराई उतनी ही आसान थी। ऐसे ही जैसे किसी को भी जीवन में उच्च आदर्शों को पाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है, सामान्य जीवन के लिए अथवा पतन के लिए किसी को विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ता।

पारो में तीसरा दिन है। सवा दस बजे नीमा गाड़ी लेकर आ गया। पहले मन्दिर देखने गये पर वह लंच का समय होने के कारण बंद हो गया था। उसके बाद भूटान का संग्रहालय देखने गये, जहाँ बड़े-बड़े कक्षों में यहाँ की मुखौटा कला, चित्रकला आदि को दर्शाया गया है। अद्भुत मुखौटे थे तथा अति प्राचीन पेंटिंग्स थीं। वहाँ से पारो शहर का सुंदर दृश्य भी दिखाई पड़ रहा था। बगीचे में पीले रंग

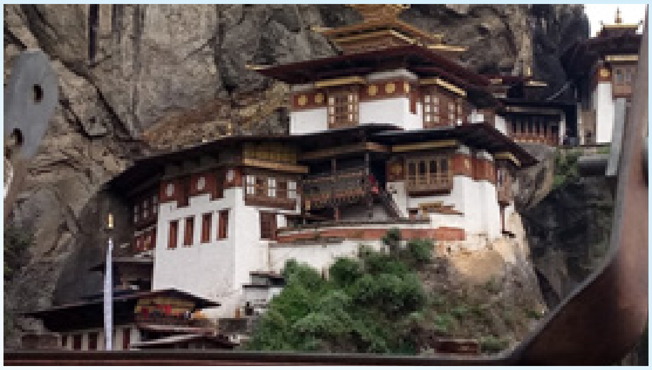

के फूलों वाला एक सुंदर वृक्ष था, जिसमें से भीनी-भीनी गंध आ रही थी। इसके बाद बियर फैक्ट्री देखने गये, जहाँ बड़े-बड़े टैंकर्स तथा अन्य उपकरण रखे हुए थे। यहाँ से हम मन्दिर गये जो अब खुल गया था। अंतिम पड़ाव था वह स्थान जहाँ पारंपरिक पोषाक पहनकर तस्वीर खिंचानी थी और धनुष-बाण व हाथ से छोटे तीरों को चलाकर निशाना लगाना था। इसमें सभी ने उत्साह से भाग लिया। होटल पहुँचे तो अँधेरा हो गया था।

सुबह नाश्ते के लिए गये तो एक अन्य भारतीय शेफ से परिचय हुआ, उसने बहुत आग्रह करके कई व्यंजन खिलाये तथा दोपहर के लिए स्नैक्स भी पैक कर दिए। वह देहरादून का रहने वाला है और दो वर्षों से भूटान में है। एक दिन पहले भी एक भारतीय शेफ मिला था। भोजन परोसने वाले भी बहुत शालीन हैं और बेहद स्नेह से खिलाते हैं। मेहमानों की आवभगत करना उन्हें आता है। साढ़े बारह बजे होटल से चेक आउट किया, एक घंटा बाजार में बिताया, कुछ उपहार खरीदे और डेढ़ बजे हवाई अड्डे आ गये। भूटान में बिताये सुखद दिनों की स्मृतियाँ लेकर शाम होने से पूर्व ही भारत आ गये।

भूटान में लोग सफाई के प्रति अति संवेदनशील हैं और उनमें अपने गुरुओं तथा भगवान बुद्ध के प्रति श्रद्धा कूट-कूट कर भरी है। वे उनके बारे में जब बात करते हैं तो सच्चाई और प्रेम उनके चेहरे व आँखों से झलकता है। अभी भी वे संसार की आधुनिक बुराइयों, मशीनी जिन्दगी और प्रदूषण तथा हिंसा से बहुत दूर हैं, पर कब तक वे अछूते रह पायेंगे, कहना कठिन है।

" अपनी बात को इस देश में आखिरी व्यक्ति तक पहुंचाने का सरलतम मार्ग है हिंदी। हिंदी के माध्यम से हम किसी व्यक्ति को ही नहीं, अपितु उसकी आत्मा तक को स्पर्श करने की क्षमता रखते हैं, क्योंकि हिंदी आज की जन सामान्य की आत्मा में बसती है ।"

- आचार्य केशव चंद्रसेन

ऑयल ने 'फेम सेफ्टी एक्सीलेंस अवार्ड-2019' प्राप्त किया

ऑयल इंडिया लिमिटेड ने 02 अगस्त, 2019 को ललित होटल, चंडीगढ़ में आयोजित पर्यावरण, स्थिरता एवं सुरक्षा पर राष्ट्रीय सम्मेलन- 2019 तथा राष्ट्रीय पुरस्कार समारोह- 2019 के दौरान प्लेटिनम श्रेणी में राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित 'फेम सेफ्टी एक्सीलेंस अवार्ड 2019' प्राप्त किया। उक्त पुरस्कार श्री पवन कुमार बंसल, पूर्व केन्द्रीय तथा कैबिनेट मंत्री, रेलवे द्वारा चंडीगढ़ में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया। दिनांक 14 जून, 2019 को शुक्रवार की बैठक में आवासी मुख्य कार्यपालक को यह पुरस्कार सौंप दिया गया।

ऑयल को भारत में काम करने के लिए 'तृतीय सर्वश्रेष्ठ कंपनी' के रूप में चुना गया

विश्व मानव संसाधन विकास कांग्रेस एवं पुरस्कार के 27वें संस्करण में 'ड्रीम कंपनीज़ टू वर्क फ़ॉर' अवार्ड द्वारा ऑयल इंडिया लिमिटेड को भारत में काम करने वाली तीसरी सर्वश्रेष्ठ कंपनी के रूप में चुना गया। दिनांक 15 से 17 फरवरी, 2019 को ताज लैंड्स एंड, मुंबई में आयोजित समापन कार्यक्रम के दौरान उक्त पुरस्कारों का वितरण किया गया। व्यवसाय के प्रति अपने मानवीय दृष्टिकोण से प्रेरित होनेवाली ऑयल इंडिया को 200 सार्वजनिक क्षेत्र तथा निजी कंपनियों में से ड्रीम कंपनीज़ टू वर्क फ़ॉर श्रेणी में शीर्ष तीन में स्थान मिला है। यह रैंकिंग संगठनों के लिए एक निर्णायक सम्मान बन गई है, जो विभिन्न श्रेणियों में किए गए अग्रणी प्रयासों को मान्यता प्रदान करती है। मानव संसाधन उत्कृष्टता को मान्यता तथा प्रशंसा करने के अंतर्निहित उद्देश्य के साथ उद्योग जगत के निर्णायकों के एक स्वतंत्र विशेषज्ञ पैनल द्वारा पुरस्कार विजेताओं को चुना गया।

यह रैंकिंग ऑयल की विभिन्न मानव संसाधन प्रथाओं तथा ज्ञानार्जन एवं विकास पहलों के आधार पर प्रदान की गयी, जिसे 7 और 8 फरवरी, 2019 को जूरी के समक्ष प्रस्तुत किया गया था। ऑयल ने अपनी ज्ञानार्जन एवं विकास, मानव संसाधन प्रथाओं तथा निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए विभिन्न श्रेणियों में 14 व्यक्तिगत पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

छह शिक्षकों को ऑयल शिक्षा रत्न पुरस्कार 2018 से सम्मानित किया गया

दिनांक 18 दिसम्बर, 2018 को दुलियाजान क्लब में छह उत्कृष्ट शिक्षकों को ऑयल शिक्षा रत्न पुरस्कार 2018 से सम्मानित किया गया। उक्त समारोह में श्री उत्पल बोरा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ऑयल, मुख्य अतिथि के रूप में एवं प्रो. रंजीत तामुली, कुलपति, डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इसके अलावा श्री पी. के. शर्मा, निदेशक (प्रचालन), ऑयल, डॉ. पी. चन्द्रशेखरन, निदेशक (अन्वेषण एवं विकास), ऑयल, श्री बी. पी. शर्मा, आवासी मुख्य कार्यपालक, ऑयल, श्री प्राणजित डेका, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन), ऑयल तथा अन्य गणमान्य अतिथि भी उपस्थित थे। इस अवसर पर शिक्षा रत्न पुरस्कार के अंतर्गत प्रत्येक पुरस्कार प्राप्तकर्ता को दो लाख रुपए एवं चांदी का स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। ऑयल शिक्षा रत्न पुरस्कार, 2018 प्राप्त करने वाले छह शिक्षकों के नाम हैं : 1. श्रीमती प्रमिला नार्ज़ारी, नं. 91 मक्रा सिलबारी एलपी स्कूल, जिला- चिरांग, 2. श्री जतीन बरदलै, दिरिंग बगीचा एलपी स्कूल, काजीरंगा, 3. श्रीमती हरिमती कलिता, छयगाँव मोक्ताब एलपी स्कूल, कामरूप (ग्रामीण), 4. श्री ब्रिज किशोर गुप्ता, सैखोवा हिंदी हाई स्कूल, तिनसुकिया, 5. श्री चन्द्र सहरीया, पकाडाली हाई स्कूल, दरंग, 6. डॉ. विजय शर्मा, जेडीएसजी कॉलेज, बोकाखाट। श्री उत्पल बोरा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ऑयल ने ऑयल शिक्षा रत्न पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को बधाई देते हुए कड़ी मेहनत तथा शिक्षक समाज के प्रयासों की सराहना की जो अगली पीढ़ी के चरित्र के निर्माण में मुख्य भूमिका निभाते आए हैं। उन्होंने ऑयल सुपर 30 तथा ऑयल दीक्षा जैसे विभिन्न सीएसआर योजनाओं के माध्यम से ऑयल प्रचालन क्षेत्रों में शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करने के लिए ऑयल की भूमिका से सभी को अवगत कराया। प्रोफेसर रंजीत तामूली ने अपने संबोधन में ऑयल के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा रत्न पुरस्कार सिर्फ एक पुरस्कार नहीं है बल्कि अन्य शिक्षकों को शिक्षण उत्कृष्टता का अनुकरण करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु एक मंच है। उन्होंने सीएसआर के तहत अनुकरणीय पहल तथा कंपनी अधिनियम के अनुसार निर्धारित वार्षिक लक्ष्य से परे काम करने के लिए ऑयल इंडिया की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री पी के शर्मा, निदेशक (प्रचालन), ऑयल तथा डॉ. पी चंद्रशेखरन, निदेशक (अन्वेषण एवं विकास), ऑयल ने पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को बधाई दी तथा छात्रों के बीच कल्पना प्रज्ज्वलित करने तथा सीखने के प्रति उनके प्रेम एवं सदिच्छा को बढ़ाने के लिए शिक्षक समाज की सराहना की। शिक्षकों की अनुकरणीय सेवा का सम्मान करते हुए, श्री बी पी शर्मा, आवासी मुख्य कार्यपालक, ऑयल ने पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को बधाई दी तथा ऑयल के प्रचालन क्षेत्रों में शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए ऑयल की प्रतिबद्धता को दोहराया। सबसे पहले, श्री प्राणजित डेका, कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) ने उनके स्वागत भाषण में, गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया तथा शिक्षण समुदाय की सर्वांगीण उत्कृष्टता को मान्यता देने के लिए पुरस्कार शुरू करने के पीछे उद्देश्य के बारे में जानकारी दी। ऑयल इंडिया लिमिटेड 2013 से ही अपने शैक्षिक सीएसआर पहल के तहत असम सरकार के अंतर्गत आनेवाले सभी प्रांतीय विद्यालयों (प्राथमिक से उच्चतर तक) एवं असम के राज्यिक विश्वविद्यालय के अधीन संबद्ध गैर तकनीकी पूर्व-स्नातक महाविद्यालयों के सेवारत शिक्षकों को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित करने हेतु ऑयल शिक्षा रत्न पुरस्कार प्रदान करता रहा है।

पुरस्कार एवं प्रोत्साहन

श्री त्रिदिव हजारिका, उप महाप्रबंधक (सीएसआर एवं सीसी), जन संपर्क विभाग, ऑयल इंडिया लिमिटेड ने 23 मार्च, 2019 को गुवाहाटी में आयोजित 15वें जीएमए प्रबंधक प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त किया। गुवाहाटी प्रबंधन संघ (GMA) द्वारा आयोजित, सर्वश्रेष्ठ प्रबंधक प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा 29 मार्च, 2019 को गुवाहाटी में असम राज्य संग्रहालय सभागार में आयोजित एक पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कार ग्रहण किया। श्री हजारिका ने रॉयल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. (डॉ.) एस पी सिंह के करकमलों से, डॉ. पी भराली, पूर्व निदेशक (संचालन), ऑयल, श्री स्वप्निल बरुआ, आईएएस (सेवानिवृत्त), पूर्व आयुक्त, उद्योग एवं वाणिज्य, असम सरकार, जीएमए के वरिष्ठ अधिकारी तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में उक्त पुरस्कार प्राप्त किया।

अग्नि सेवा कार्मिक श्री गदाधर तालुकदार, पर्यवेक्षक (अग्नि सेवा), पंजीकरण संख्या 10/3437 को उत्कृष्ट सेवा हेतु स्वतंत्रता दिवस 2017 के अवसर पर राष्ट्रपति अग्नि सेवा पदक से सम्मानित किया गया। ऑयल इंडिया लिमिटेड के इतिहास में यह प्रथम अवसर है कि किसी अग्नि सेवा कार्मिक को यह उच्च पुरस्कार प्राप्त हुआ है। पुरस्कार स्वरूप गृह मंत्रालय द्वारा भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित सम्मान पत्र एवं पदक प्राप्त हुआ है।

श्री बी. पी. शर्मा, आवासी मुख्य कार्यपालक, ऑयल द्वारा 72वें स्वतंत्रता दिवस समारोह 2018 के अवसर पर श्री गदाधर तालुकदार को यह सम्मान पत्र एवं पदक सौंपा गया। साथ ही ऑयल इंडिया लिमिटेड की तरफ से सराहना स्वरूप पाँच हजार रूपए (रू. 5000/-) का चेक भी श्री तालुकदार को प्रदान किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दुलियाजान की 35वीं बैठक संपन्न

दिनांक 07 मई, 2019 को ऑयल इंडिया लिमिटेड की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (नराकास) दुलियाजान की 35वीं बैठक संपन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता ऑयल के श्री दिलीप कुमार भूयाँ, महाप्रबंधक (जन संपर्क) एवं उपाध्यक्षता श्री त्रिदिव हजारिका, उप महाप्रबंधक (सीएसआर एवं सीसी) ने की। दुलियाजान और उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों और बैंकों के सदस्य कार्यालयों ने इस बैठक में अपनी सक्रीय सहभागिता सुनिश्चित की।

इस बैठक में सदस्य कार्यालयों के साथ (1) राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2019-20 (2) धारा 3(3) का अनुपालन (3) राजभाषा नियमों का अनुपालन (द्विभाषी सामग्री के विशेष संदर्भ में) (4) ई-मैगजीन के प्रकाशन पर विचार-विमर्श (5) ऑनलाइन तिमाही रिपोर्ट का प्रेषण पर चर्चा एवं सुझाव (6) विगत वर्ष की तिमाही रिपोर्ट की समीक्षा (7) हिन्दी प्रशिक्षण एवं हिन्दी कार्यशाला के आयोजन पर विस्तृत चर्चा की गई।

नराकास, दुलियाजान के सदस्य सचिव डॉ. शैलेश त्रिपाठी, हिन्दी अधिकारी, ऑयल ने विभिन्न कार्यालयों से पधारे सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने प्रस्तुतिकरण के माध्यम से राजभाषा के कार्यान्वयन पर प्रकाश डाला और विशेष करके कार्यालयों से प्राप्त तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर चर्चा की, और सदस्य कार्यालयों से आग्रह किया कि वे अपने तिमाही प्रगति रिपोर्ट को ऑनलाइन भरने का प्रयास करें।

हिन्दी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, डिब्रूगढ़ से पधारे श्री भास्कर बाबू, हिन्दी प्राध्यापक ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि हिन्दी प्रशिक्षण का कार्य सभी कार्यालयों में पूरा किया जाना अनिवार्य है। उन्होंने प्रस्तुतिकरण के माध्यम से हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ एवं पारंगत के साथ ही टंकण/आशुलिपि और उसमें मिलने वाले पुरस्कार/एक मुश्त राशि के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में श्री बदरी यादव, अनुसंधान अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी भी बैठक में उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि प्रत्येक तिमाही में तिमाही प्रगति रिपोर्ट ऑनलाइन भरें और उसकी एक प्रति नराकास, दुलियाजान को प्रेषित करें। तिमाही प्रगति रिपोर्ट के आंकड़े यथासंभव सही व उपलब्ध आंकड़े ही भरा करें। वार्षिक कार्यक्रम में प्रदत्त लक्ष्यों को हासिल करने का सतत प्रयास करें। समय के साथ हमेशा अपडेट रहें। ई-मैगजीन प्रकाशित की जानी चाहिए क्योंकि पुरस्कार योजना के अंतर्गत इसके लिए भी अंक है। हिन्दी कार्यशाला के बारे में उन्होंने कहा कि दो-चार छोटे कार्यालय मिलकर भी कार्यशाला कर सकते हैं। अंत में ऑयल इंडिया के द्वारा निरंतर सफल अध्यक्षता एवं राजभाषा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए उन्होंने अपना हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

बैठक के उपाध्यक्ष श्री त्रिदिव हजारिका ने सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि हमें अधिक से अधिक कार्यालयी कार्य हिन्दी में करने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने घोषणा किया कि जन संपर्क विभाग के राजभाषा अनुभाग द्वारा ऑयल में पहली बार टंकण प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रारंभ करने का प्रस्ताव है जिसमें हमारे नराकास, दुलियाजान के सदस्य भी सक्रिय रूप से भाग ले सकेंगे।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री दिलीप कुमार भूयाँ, महाप्रबंधक (जन संपर्क) ने कार्यालयों की उपस्थिति पर प्रसन्नता व्यक्त किया और कहा कि इसमें श्री बदरी यादव जी का बहुत बड़ा योगदान है। उन्होंने जानकारी दी कि हमारे यहाँ असमिया न जानने वाले कार्मिकों को असमिया और हिन्दी न जानने वाले कार्मिकों को हिन्दी में प्रशिक्षण दिया जाता है।

श्री प्राणजित डेका, आवासी मुख्य कार्यपालक, ऑयल ने राजभाषा के सफल कार्यान्वयन के प्रति अपनी वचनबद्धता दोहराते हुए सदस्य कार्यालयों को भी अपने पूरे मनोयोग से इसमें सम्मिलित होने के लिए कहा। उपस्थित सभी सदस्यों ने आवासी मुख्य कार्यपालक को उनकी पदोन्नति के लिए बधाई देते हुए उनके मार्गदर्शन में किये जा रहे राजभाषा कार्यान्वयन के लिए उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और अंत में उन्हें फूलाम गामोछा एवं स्मृति चिह्न से सम्मानित किया गया।

डॉ. त्रिपाठी, सदस्य सचिव, नराकास, दुलियाजान के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही नराकास, दुलियाजान की 35वीं बैठक समाप्त हुई।

कलकत्ता शाखा कार्यालय में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 28.03.2019 को कलकत्ता शाखा में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के अवसर पर श्री ए रॉयचौधुरी, महाप्रबन्धक(कोलकाता कार्यालय)ने कहा कि ऐसी कार्यशालाओं से कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों को हिन्दी में काम करने में सुविधा होगी तथा उनकी हिन्दी में काम करने की झिझक दूर होगी। उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाओं की उपयोगिता कोलकाता कार्यालय के लिए अधिक है क्योंकि इन कार्यशालाओं से कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी के बारे में जानकारी मिलती है तथा उन्हें हिन्दी में कार्य करने का अभ्यास भी कराया जाता है। प्रसंगित कार्यशाला में विभिन्न अनुभागों के कुल 15 कर्मचारियों ने भाग लिया और श्रीमती पूनम दीक्षित, सहायक निदेशिका, हिंदी शिक्षण योजना, कोलकाता कार्यालय, इस कार्यशाला में बतौर संकाय उपस्थित हुईं। उन्होंने हिंदी शिक्षण से जुड़े अपने विस्तृत अनुभव से प्रतिभागियों

को प्रयोजनमूलक हिंदी में काम करने का अभ्यास कराया तथा उन्हें राजभाषा नियम अधिनियम की जानकारी दी। हिंदी में काम करने की सुविधा को ध्यान में रखते हुए नामांकित कार्मिकों को हैडफोन सहित माइक वितरित करने के साथ हिन्दी कार्यशाला का समापन हुआ।

कोलकाता कार्यालय में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन

ऑयल इंडिया लिमिटेड के कोलकाता कार्यालय द्वारा 10 जनवरी 2019 को कार्यालय में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अपने विचार रखते हुए श्री अंशुमन रॉयचौधुरी, महाप्रबंधक (को. का.) ने प्रसन्नता अभिव्यक्त की कि कोलकाता कार्यालय द्वारा पहली बार विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर इस प्रकार का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। उन्होंने यह भी

कहा कि हमारे कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी तथा प्रयोगमूलक हिंदी के प्रति सदैव गंभीरता से प्रयास किए जाते रहे हैं। सभागार में मौजूद कार्मिकों की उपस्थिति इस बात की गवाह है। उन्होंने बताया कि वर्ष 1975 में पहली बार नागपुर में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया था तथा वर्ष 2006 में तत्कालीन प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा प्रत्येक वर्ष की 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाने का निर्णय लिया गया और तब से इसे प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है। उपस्थित कार्मिकों का स्वागत करते हुए डॉ. वी एम बरेजा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) ने विश्व हिंदी दिवस के महत्व से उन्हें परिचित कराया। इस कार्यक्रम के अवसर पर संविधान निर्माण सम्बंधी वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया तथा कार्मिकों द्वारा हिंदी कविताएं प्रस्तुत की गईं तथा कार्यालय के कार्मिकों के लिए डॉ. बरेजा द्वारा तत्क्षण हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और पुरस्कार विजेताओं को महाप्रबंधक (को. का.) द्वारा आकर्षक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का अंत डॉ. वी एम बरेजा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा) द्वारा धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ हुआ।

> "भाषा के भेद से और बाधा नहीं पड़ेगी, सब लोग अपनी-अपनी मातृभाषा की रक्षा करके हिंदी को साधारण भाषा के रूप में पढ़कर इस भेद को नष्ट कर देंगे।"
>
> - महर्षि अरविंद
>
> घोष, अरविंद : धर्म, साप्ताहिक राष्ट्रभाषा, पृ. 17

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर में हास्य कवि सम्मेलन आयोजित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर में दिनांक 13 अप्रैल, 2019 को हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें ऑयल इंडिया लिमिटेड के निदेशक(मानव संसाधन एवं वाणिज्य विकास)श्री विश्वजीत रॉय, परियोजना कार्यालय के कार्यकारी निदेशक श्री सुशील चन्द्र मिश्र के साथ-साथ परियोजना कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों एवं उनके परिवारवर्ग सहित जोधपुर के कई गण्य-मान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। सम्मेलन के शुरूआत में मुख्य प्रबंधक(राजभाषा) श्री हरेकृष्ण बर्मन ने देश के सुविख्यात उपस्थित माननीय कविगण-पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा, श्री दिनेश बावरा, श्री शंभू शिखर और श्री रोहित शर्मा के साथ-साथ उपस्थित सभी सज्जनों का स्वागत किया।

परियोजना कार्यालय के कार्यकारी निदेशक श्री सुशील चन्द्र मिश्र ने अपने स्वागत भाषण में कहा है कि आज की आधुनिक जीवन शैली के युग में प्रतिदिन की भागमभाग में मनुष्य बहुत ही व्यस्त हो गया है। हम सभी कॉर्पोरेट जगत के लोग अधिकतर समय लक्ष्य प्राप्ति के लिए सतत प्रयास करते रहते हैं। इन सभी कारणों से आज प्राय: लोग तनाव एवं चिंताओं से घिरे रहते हैं। इस तरह के तनाव से राहत दिलाने में हास्य व्यंग्य का बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। निदेशक(मानव संसाधन एवं वाणिज्य विकास) श्री विश्वजीत रॉय ने भी सम्मेलन के सफल आयोजन के लिए परियोजना कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद दिया।

हास्य कवि सम्मेलन में उपस्थित कविय-पद्मश्री सुरेन्द्र शर्मा, श्री दिनेश बावरा, श्री शंभू शिखर और श्री रोहित शर्मा ने हिन्दी की वाचिक परंपरा को आगे बढ़ाने में फूहड़ हास्य को दरकिनार करते हुए शुद्ध हास्य तथा तीखे व्यंग्य से अपनी कविताओं और प्रस्तुति का अलंकरण किया। आपकी कविताओं में हंसी की फुहार के साथ समसामयिक परिस्थितियों पर ऐसा तीक्ष्ण कटाक्ष देखने को मिला, जो यकायक श्रोता को सोचने पर विवश कर दिया। आपने विखंडित होती संस्कृति, सामाजिक चेतना, राजनीति, मंहगाई, पर्यावरण, बुराइयों, अराजकता तथा आतंकवाद तमाम विषयों पर अपने विचारों को रखें और विशेष बात यह है कि इन अति गंभीर विषयों की बात करते समय श्रोताओं को कहीं भी नीरस नहीं होने दिये।

सम्मेलन का संचालन श्री हरेकृष्ण बर्मन, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) ने किया। श्री माधुर्ज्य बरुआ, उप महाप्रबंधक(प्रशासन एवं क.स.) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हास्य कवि सम्मेलन संपन्न हुआ।

ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान में हिन्दी प्रशिक्षण

आप लोगों ने यह सुना ही होगा कि 'एक कोस में वाणी और चार कोस में पानी' बदल जाता है। भाषा वही जीवित रहती है जिसका प्रयोग आम जनता आपस में करती रहती हैं। भाषा विचारों की अभिव्यक्ति और संप्रेषण की जीवंतकृति है। भाषा कोई भी हो, चाहे आंचलिक, राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय हो, वह समाज को सदैव एकता के सूत्र में बाँधने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। हमारे देश में हिंदी भाषा को यह श्रेय जाता है कि उसमें एकता के सूत्र में बांधे रखने की क्षमता है। भारत में लोगों के बीच बात-चीत करने का सबसे बेहतर माध्यम हिन्दी है।

आजादी के पश्चात भारत के संविधान बनाने वालों ने यह जरूरी समझा कि देश में एक ऐसी भाषा होनी चाहिए, जिसे सब लोग आसानी से बोल व समझ सके, आम लोग एक-दूसरे के नजदीक आ सकें, फलस्वरूप जाति-धर्म के लोग आपस में विचार-विमर्श व गहरी मंथन के पश्चात्, तब यह तय हुआ कि हिदी को ही ऐसी भाषा का दर्जा दिया जाए। आज के भारतीय सन्दर्भ में 'हिन्दी' हमारी सम्पर्क भाषा ही नहीं, लोक-स्वीकृति के आधार पर 'राष्ट्रभाषा' और भारतीय संघ की 'राजभाषा' भी है। 'राष्ट्रभाषा' का सीधा अर्थ है राष्ट्र की वह भाषा जिसके माध्यम से सम्पूर्ण राष्ट्र में विचार विनिमय एवं सम्पर्क किया जा सके। 'राजभाषा' का सामान्य अर्थ है राजकाज की भाषा। वस्तुत: राजभाषा सरकार और जनता के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है। भारतवर्ष के विचारों की अभिव्यक्ति करनेवाली सम्पर्क भाषा 'हिन्दी' को 'राजभाषा' के रूप में स्वतंत्र भारत के संविधान में 14 सितम्बर, 1949 में राजभाषा समिति ने मान्यता दी। 26 जनवरी, 1950 से संविधान लागू हुआ और हिन्दी को राजभाषा के रूप में संवैधानिक मान्यता मिली।

पेट्रोलियम मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले सभी उपक्रमों के अधिकारी एवं कर्मचारियों को राजभाषा कार्यान्वयन के निर्धारित लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए अपने दिन प्रतिदिन के कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना अनिवार्य है। ऑयल इंडिया लिमिटेड, भारत सरकार के पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अंतर्गत एक अग्रणी नवरत्न पेट्रोलियम कंपनी है। ऑयल का मुख्य कार्य कच्चे तेल का अन्वेषण, उत्पादन एवं परिवहन तथा प्राकृतिक गैस का वितरण करना है। ऑयल इंडिया लिमिटेड अपने प्रचालनीय कार्य क्षेत्र में व्यस्तता के बावजूद, राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की निरंतर वृद्धि सुनिश्ति करने और हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम निरंतरता पर ध्यान देती आ रही है। कंपनी अपनी समृद्ध विरासत, इतिहास एवं परंपरा के अनुरूप अपने कार्मिकों एवं नराकास सदस्यों के मध्य भाषा, साहित्य, कला एवं संस्कृति के प्रति रूझान एवं राजभाषा में अपना कार्यालयीन कार्य करने में सक्षम बनाने हेतु सदैव तत्पर रही है। राजभाषा नियम के अनुसार यह आवश्यक है कि कार्यालयों में काम करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को दसवीं कक्षा स्तर तक का हिन्दी भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है, अन्यथा कार्यालय स्तर पर प्रयास कर उन्हें हिन्दी प्रशिक्षण दिलाया जाता है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार समय-समय पर केन्द्रीय सरकार के कार्मिकों को हिन्दी में अपना कार्यालयीन काम काज करने में सक्षम बनाने के लिए उन्हें हिन्दी में प्रशिक्षित करने हेतु आदेश/निर्देश जारी करता रहता है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशों एवं महामहिम राष्ट्रपति के आदेशों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए ऑयल इंडिया लिमिटेड का क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान कार्मिकों को हिन्दी में प्रशिक्षित करने हेतु हिन्दी की कक्षाएं (प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ) का आयोजन निरंतर करता रहा है। प्रबोध प्रारंभिक पाठ्यक्रम है। इसका स्तर प्राइमरी कक्षा की हिंदी के स्तर के समकक्ष है। प्रवीण माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम है। इसका स्तर मिडिल कक्षा की हिंदी की हिंदी के स्तर के समकक्ष है। प्राज्ञ अंतिम पाठ्यक्रम है। इसका स्तर हाईस्कूल की हिंदी के स्तर के समकक्ष है।

ऑयल इंडिया लिमिटेड की समेकित प्रोत्साहन/पुरस्कार योजना वर्ष 1998 से प्रारंभ की गई थी। प्रसंगित योजना में राजभाषा हिन्दी में कार्यालयीन कार्य करने, हिन्दी परीक्षाएं/हिन्दी टंकण, हिन्दी आशुलिपि प्रशिक्षण प्राप्त करने, हिन्दी में टिप्पण/आलेखन आदि, मूल रूप से हिन्दी में तकनीकी पुस्तकें लिखने, हिन्दी में तकनीकी आलेख लिखने पर प्रोत्साहन/पुरस्कार राशि प्रदान की जाती है। प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ व असमिया प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कक्षाओं में उपस्थिति के आधार पर भी प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाती है। प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ की कक्षायें वर्ष में दो बार चलाई जाती है एवं उनकी परीक्षाएं राजभाषा विभाग द्वारा क्रमश: मई एवं नवम्बर माह में आयोजित की जाती है।

परन्तु, हिन्दी देश की राजभाषा होने के बावजूद आज हर जगह अंग्रेजी का वर्चस्व कायम है। हिन्दी जानते हुए भी लोग हिन्दी में बोलने, पढ़ने या काम करने में हिचकने लगे हैं। इसलिए सरकार का सदैव प्रयास रहता है कि हिन्दी के प्रचलन के लिए उचित माहौल तैयार की जा सके। ऑयल इंडिया लिमिटेड अपने कार्मिकों के मध्य हिन्दी के प्रचलन हेतु उचित माहौल को बनाए रखने के लिए भारत सरकार के प्रत्येक पहल व आदेश का अनुकरण करती है।

ऑयल इंडिया लिमिटेड में असमिया प्रशिक्षण कार्यक्रम 'निपुण'

किसी भी भाषा का ज्ञान मानव के लिए सदैव लाभदायक व हितकारी होता है। भाषा विचारों की अभिव्यक्ति और संप्रेषण की जीवंतकृति है। भाषा कोई भी हो, चाहे वह आंचलिक भाषा हो, राष्ट्रीय भाषा हो, राजभाषा हो या चाहे वह अंतरराष्ट्रीय भाषा हो, वह समाज को सदैव एकता के सूत्र में बाँधने का महत्वपूर्ण कार्य करती है, जिससे आपसी भाईचारे को बढ़ावा मिलता है। अलग-अलग भाषाओं का ज्ञान होने पर उनकी उत्कृष्ट साहित्यों का अध्ययन करने का मौका मिलता है। अतएव आप जितनी भाषा सीखेंगे वह भाषा आपके जीवन के किसी भी मोड़ पर अवश्यक काम आएगा।

ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार समय-समय पर केन्द्रीय सरकार के कार्मिकों को हिन्दी में अपना कार्यालयीन काम काज करने में सक्षम बनाने के लिए उन्हें हिन्दी में प्रशिक्षित करने हेतु जारी आदेश/निर्देश का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित करने के साथ-साथ हिन्दी भाषी कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों को असमिया भाषा में दक्ष बनाने के लिए भी असमिया प्रशिक्षण कार्यक्रम 'निपुण' को भी लागू किया गया है।

ऑयल इंडिया लिमिटेड, भारत सरकार के पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय के अंतर्गत एक अग्रणी नवरत्न पेट्रोलियम कंपनी है। ऑयल का मुख्य कार्य कच्चे तेल का अन्वेषण, उत्पादन एवं परिवहन तथा प्राकृतिक गैस का वितरण करना है। ऑयल इंडिया लिमिटेड अपने प्रचालनीय कार्य क्षेत्रों में व्यस्तता के बावजूद, राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की निरंतर वृद्धि सुनिश्चित करने, हिन्दी प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने के साथ-साथ हिन्दी भाषी के लिए भी असमिया प्रशिक्षण कार्यक्रम 'निपुण' को भी निरंतर जारी रखा है। ऑयल इंडिया लिमिटेड का क्षेत्र मुख्यालय दुलियाजान नगर में स्थित है। इस कंपनी में कार्य करने वाले अधिकांश श्रमशक्ति देश के अलग-अलग राज्यों से आए हुए हैं और यहीं पर कार्यरत हैं। यहां पर बहुत से अधिकारी एवं कर्मचारी ऐसे भी हैं जिनकी मातृभाषा असमिया नहीं होने के फलस्वरूप या असमिया भाषा का ज्ञान न होने के कारण उन्हें अपने रोजमर्रा के कामों में बहुत सी असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। अतएव ऑयल इंडिया लिमिटेड का प्रचालनीय कार्य सुचारू रूप से चलाने के लिए हिन्दी भाषी कार्मिकों को असमिया भाषा का ज्ञान दिलाने हेतु ऑयल प्रबंधन ने राजभाषा हिन्दी के प्रबोध प्रशिक्षण के समकक्ष असमिया प्रशिक्षण को भी आवश्यक सुविधाए मुहैया कराई हैं ताकि वे असमिया भाषा भली-भांति सीखकर स्थानीय असमिया लोगों के साथ असमिया भाषा में सुगमता पूर्वक आपस में संवाद कर अपने कार्यों को कुशलतापूर्वक निर्वहन कर सके। अत: उन अधिकारियों एवं कर्मचारियों को असमिया भाषा बोलने एवं समझने में सक्षम बनाने के लिए अभ्यास आधारित पाठ्यक्रम ''निपुण'' का प्रशिक्षण कार्यक्रम जारी रखी गई है।

यह निपुण प्रशिक्षण कार्यक्रम असमिया भाषा सीखने का आधार पाठ्यक्रम है अत: इसे हिन्दी प्रशिक्षण में चलाये जाने वाले पाठ्यक्रम 'प्रबोध' के समकक्ष है और उसी आधार पर प्रबोध के लिए लागू सभी प्रोत्साहन योजनाएं भी इस पाठ्यक्रम के प्रशिक्षार्थियों को समानरुप से देय है। प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ के लिए प्रस्तावित कक्षाओं में उपस्थिति के आधार पर प्रस्तावित प्रोत्साहन राशि, इस पाठ्यक्रम के लिए भी समान रुप से लागू है।

हिन्दी शिक्षण योजना, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा नवंबर, 2018 में आयोजित हिन्दी प्रबोध/प्रवीण/प्राज्ञ परीक्षा के परिणाम

प्रबोध				
क्र सं	परिक्षार्थी का नाम	विभाग	प्राप्तांक	परिणाम
1.	श्री अर्पण डेकारी	एलपीजी	70.00%	उत्तीर्ण
2.	श्री निलुत पाल गोगोई	एलपीजी	75.60%	उत्तीर्ण
3.	श्री सत्य रंजन चेतिया	एलपीजी	79.30%	उत्तीर्ण
4.	श्री सुरेश हजारिका	एलपीजी	70.60%	उत्तीर्ण
5.	श्री अखिल शर्मा	एलपीजी	83.60%	उत्तीर्ण
6.	श्री राजदीप हजारिका	एलपीजी	69.30%	उत्तीर्ण
7.	श्री अनंत प्रतीम निलकंठ नियोग	एलपीजी	80.60%	उत्तीर्ण
8.	श्री संजय चक्रवर्ती	एलपीजी	78.00%	उत्तीर्ण
9.	श्री आदित्य प्रसाद गोस्वामी	योजना	83.00%	उत्तीर्ण
10.	श्री मैथ्यू थाँगजाम	योजना	78.60%	उत्तीर्ण
11.	सुश्री बोरनाली बोरा	सामग्री	82.00%	उत्तीर्ण
12.	श्री ऋतुराज बोरा	सामग्री	86.30%	उत्तीर्ण
13.	श्री तुलन्त सैकिया	सामग्री	85.00%	उत्तीर्ण
14.	सुश्री रंजीता राय तपादार	सामग्री	88.30%	उत्तीर्ण
15.	श्री निपन सेंसुआ	सामग्री	89.30%	उत्तीर्ण
16.	श्री कौशिक दत्ता	सामग्री	79.30%	उत्तीर्ण
17.	श्री प्रणब ठाकुरिया	सामग्री	83.60%	उत्तीर्ण
18.	श्री चितरंजन चेतिया	सामग्री	85.00%	उत्तीर्ण
19.	श्री ऋतिक शर्मा तामुली	सामग्री	83.60%	उत्तीर्ण
20.	श्री मंदीप सोनोवाल	एलपीजी	81.00%	उत्तीर्ण
प्रवीण				
क्र सं	परिक्षार्थी का नाम	विभाग	प्राप्तांक	परिणाम
21.	श्री सुशोभन हेंस	अनुसंधान एवं विकास	80.60%	उत्तीर्ण
22.	श्री राजर्षि पाणिग्राही	अनुसंधान एवं विकास	80.30%	उत्तीर्ण
23.	श्री मृदुल कुमार हैंडिक	केंद्रीय परिसंपत्ति	80.00%	उत्तीर्ण
24.	श्री रितुबल्लभ हजारिका	यंत्रीकरण	80.60%	उत्तीर्ण
25.	श्री नयनमनि शर्मा	चिकित्सा	74.30%	उत्तीर्ण
प्राज्ञ				
26.	श्री जिस्नु ज्योति बोरा	क्षेत्र संचार	77.30%	उत्तीर्ण
27.	श्री अभिजीत सैकिया	क्षेत्र संचार	81.00%	उत्तीर्ण
28.	सुश्री रागिनी शर्मा	अनुसंधान एवं विकास	81.30%	उत्तीर्ण
29.	सुश्री निवेदिता बरूवा	यंत्रीकरण	85.00%	उत्तीर्ण

ऑयल द्वारा संचालित असमिया प्रशिक्षण कार्यक्रम 'निपुण' के प्रथम सत्र (जुलाई-दिसम्बर, 2018) का परीक्षा परिणाम

निपुण				
Sl.No.	**Name**	**Department /Address**	**Percentage**	**Result**
1.	Debasis Mishra	Material, OIL	70.0 %	Pass
2.	Pramod Ashok Mundhe	Central Asset, OIL	68.0 %	Pass
3.	Laishram Imocha	OGPL & Project, OIL	81.5 %	Pass
4.	Sanjeev Hazarika	Central Asset, OIL	77.0 %	Pass
5.	Rahul Kumar	G&R, OIL	78.5 %	Pass
6.	Tarun Kumar Singh	Admin. (School.)	75.5 %	Pass
7.	Narendra Kumar Verma	G&R, OIL	68.5 %	Pass
8.	Debabrat Naskar	KV, Duliajan	74.5 %	Pass
9.	Vivek Pal	KV, Duliajan	64.5 %	Pass
10.	Amit Kumar	KV, Duliajan	71.0 %	Pass
11.	Sunil Kumar Sahu	Materials, OIL	73.0 %	Pass
12.	Rahul Mohan	Western Asset, OIL	76.5 %	Pass
13.	Anwesh Kumar Das	Central Asset	81.5 %	Pass
14.	Jugal Kishore Mallik	Internal Audit	62.0 %	Pass
15.	Saikat Banerjee	G&R	79.5 %	Pass

"राजनीति, वाणिज्य तथा कला के क्षेत्र में देश की अखंडता के लिए हिंदी की महत्ता की ओर सभी भारतीयों को ध्यान देना चाहिए । चाहे वे किसी भी क्षेत्र के रहने वाले और अपनी-अपनी प्रांतीय भाषाएं बोलने वाले हों ।"

- राजगोपालाचारी चक्रवर्ती
चक्रवर्ती, राजगोपालाचारी : आवर डिमाक्रेसी एवं अदर इश्यूज (लैंग्वेज़ ईश्यू) मद्रास, बी.जी.पाल एंड क. 1957, पृ. 21-22

विश्व हिन्दी परिषद द्वारा राजभाषा के श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु ऑयल इंडिया लिमिटेड पुरस्कृत

महात्मा गाँधी जी की 150वीं जयंती के सुअवसर पर विश्व हिंदी परिषद द्वारा 13-14 सितंबर को एन. डी. एम. सी. सभागार, पालिका भवन, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में दो दिवसीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन एवं राजभाषा सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। उक्त अति विशिष्ट अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन एवं राजभाषा सम्मान समारोह में विभिन्न देशों के राजदूत व देश विदेश के ख्याति प्राप्त लेखक, साहित्यकार, पत्रकार, सामाजिक, राजनीतिक कार्यकर्ता, शिक्षक, शोधार्थी एवं शिक्षा जगत के मूर्धन्य विद्वानों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। ऑयल इंडिया लिमिटेड को वर्ष 2018-19 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में तकनीकी प्रयोग के लिए एवं हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में समर्पित योगदान को देखते हुए विश्व हिन्दी परिषद की पुरस्कार चयन समिति द्वारा पुरस्कृत करने हेतु ऑयल इंडिया लिमिटेड का चयन किया गया।

विश्व हिंदी परिषद द्वारा अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन एवं राजभाषा सम्मान समारोह का दिनांक 13 सितंबर, 2019, अपराह्न 10.30 बजे एन. डी. एम. सी. सभागार, पालिका भवन, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली में भव्य आयोजन किया गया। सम्मान एवं पुरस्कार सत्र की अध्यक्षता श्रीमती मृदुला सिन्हा, महामहिम राज्यपाल, गोवा, के साथ ही श्री इंद्रेश कुमार, राष्ट्रीय कार्यकारीणी सदस्य, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, श्री अर्जुन राम मेघवाल, संसदीय कार्य राज्यमंत्री, श्री के.सी. त्यागी, प्रधान महासचिव (जदयू), श्री अनिल श्रीवास्तव, प्रमुख सलाहकार नीति आयोग, भारत सरकार भी मंचासीन थे। कार्यक्रम की अध्यक्ष एवं सम्मानित सदस्यों के करकमलों द्वारा ऑयल इंडिया लिमिटेड के कार्यकारी निदेशक श्री प्रशांत बरकाकोती, नई दिल्ली, डॉ. रमणजी झा, उप महाप्रबंध (राजभाषा), नई दिल्ली एवं डॉ. शैलेश त्रिपाठी, वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, दुलियाजान, असम को पुरस्कार स्वरूप शील्ड व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

"हिंदी, हिंदुस्तानी और उर्दू एक ही भाषा के मुख्तलिफ नाम हैं। हमारा मतलब आज एक नई भाषा बनाने का नहीं है, बल्कि जिस भाषा को हिंदी, हिंदुस्तानी और उर्दू कहते हैं, उसे अंतर्प्रान्तीय भाषा बनाने का हमारा उद्देश्य है।"

- महात्मा गांधी

हरिजन सेवक, 23.5.1936

ऑयल इंडिया लिमिटेड 'पेट्रोलियम राजभाषा शील्ड' से सम्मानित

पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अपने उपक्रमों में सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने के लिये उन्हें प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सक्रिय उपक्रमों को प्रत्येक वर्ष 'पेट्रोलियम राजभाषा शील्ड' से सम्मानित किया जाता है ।

ऑयल इंडिया लिमिटेड, भारत सरकार, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर प्रयासरत रहती आई है। अपने कार्यालयों/विभागों के अतिरिक्त नराकास, दुलियाजान एवं क्षेत्र मुख्यालय दुलियाजान के विद्यालयों में भी राजभाषा हिन्दी के लिए कार्य करने एवं उसके लिए वातावरण का निर्माण करने के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करते रहता है। इसी कड़ी में ऑयल इंडिया लिमिटेड को राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग में उत्कृष्ट कार्य करने हतु वर्ष 2018-19 के लिए पेट्रोलियम राजभाषा शील्ड से पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार दर्शाता है कि ऑयल के सभी विभागों में राजभाषा हिन्दी की गतिविधियां बढ़ी हैं। इसके लिये ऑयल इंडिया लिमिटेड के समस्त अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण, विशेष करके विभागीय राजभाषा अधिकारी व कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। विगत तीन वर्षों- 2016-17, 2017-18 एवं 2018-19 से निरंतर राजभाषा हिंदी के प्रयोग में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु ऑयल इंडिया को पेट्रोलियम राजभाषा शील्ड से सम्मानित किया जा रहा है, जो हमारे लिए गर्व की बात है।

उपरोक्त शील्ड को एम. एम. कुट्टी, सचिव, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय के करकमलों से डॉ. आर. झा, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), ऑयल इंडिया लिमिटेड ने अन्य अधिकारियों - डॉ. शैलश त्रिपाठी, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, दुलियाजान, श्री जगदीश चंद, अधीक्षण साचिविक अधिकारी और श्रीमती गायत्री कुकरेजा, पर्यवेक्षण सहायक के साथ कंस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली में संपन्न समारोह में प्राप्त किया। इस पुरस्कार समारोह में मंत्रालय के श्री आशुतोष जिंदल, संयुक्त सचिव (विपणन एवं प्रशासन), श्री सुनील कुमार, संयुक्त सचिव (रिफाइनरीज), श्रीमती उषा विंजोला, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) के साथ एचपीसीएल, इंडियन ऑयल, गेल एवं तेल एवं प्राकृतिक गैस कंपनी लिमिटेड के कई वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

दस कोस पर बोली बदले, पचास कोस पर भाषा।
कदम-कदम पर साथ दे, हमारी हिंदी भाषा ।।

- श्रीमती उमा शर्मा

पति - श्री सत्येन्द्र कुमार शर्मा, उत्पादन सहायक सेवाएँ विभाग

राजभाषा अनुभाग

जन संपर्क विभाग

CIN : L11101AS1959GOI001148